A A ONLINE SOLUTION

2024
के हल प्रश्न
पत्र सहित

बिहार बोर्ड मैट्रिक 2024

सफलता की कुंजी

किसलय

Non-Hindi

By: Ashfaque Sir (Nawada)

कक्षा
10वीं

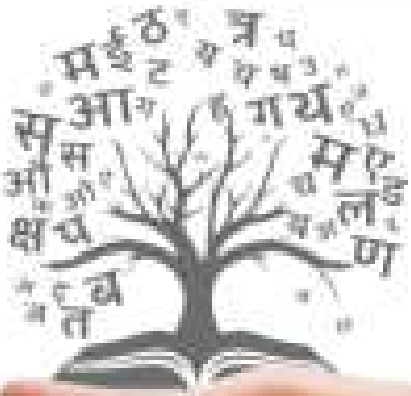

- 100% परीक्षा में आने वाला गेस बुक [IMP]

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

→ 1. तू जिन्दा है तो.....

1. 'तू ज़िन्दा है तो' नामक कविता क्या प्रकट करती है?

(A) राग को (B) उत्साह को (C) दोनों को (D) किसी को भी नहीं **Ans- (C)**

2. सिंगार करने के लिए किसे कहा गया है?

(A) धरती को (B) दुल्हन को (C) माँ को (D) पत्नी को **Ans- (A)**

3. कैसा समय भी 'गुजर जायेगा?

(A) दुःख का (B) अत्याचार का
(C) उपर्युक्त दोनों का (D) इनमें से कोई नहीं **Ans- (C)**

4. तुम्हें कौन धोखा नहीं देगी और हारकर चली जायेगी।

(A) पत्नी (B) मौत (C) तुम्हारी सहेली (D) बहन **Ans- (C)**

5. एक दिन क्या-क्या होगा?

(A) इन्कलाब बनेगा (B) अत्याचार के महत्व ढहेंगे
(C) नवयुग का श्रीगणेश होगा (D) उपरोक्त सभी **Ans- (D)**

→ 2. ईदगाह – प्रेमचंद्र

1. 'ईदगाह' कहानी किसकी परिस्थितियों पर मार्मिक ढंग से टिप्पणी करती है?

(A) युवावस्था की परिस्थितियों पर (B) लड़कपन की परिस्थितियों पर
(C) बचपन की परिस्थितियों पर (D) बुढ़ापे की परिस्थितियों पर **Ans- (C)**

2.'ईदगाह' शीर्षक कहानी के लेखक कौन हैं?

(A) फणीश्वर नाथ 'रेणु' (B) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(C) रामधारी सिंह 'दिनकर' (D) प्रेमचन्द **Ans- (D)**

3. 'तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा। बिल्कुल न डरना– यह किसने कहा?

(A) महमूद (B) मोहसिन (C) नूरे (D) हामिद **Ans- (D)**

4. गाँव पहुँचकर बच्चों ने क्या किया?

(A) नाच किया (B) गाना बजाया (C) झगड़ा किया (D) अपने-अपने खिलौने से खेला **Ans- (D)**

5. मोहसिन के पास कितने पैसे हैं ?

(A) पंद्रह पैसे (B) बीस पैसे (C) दस पैसे (D) पच्चीस पैसे **Ans- (A)**

6. हामिद के पास कितने पैसे थे ?

(A) तीन (B) चार (C) पांच (D) छह **Ans- (A**

7. रमजान के कितने रोज के बाद ईद आती है ?

(A) तीस (B) बीस (C) पच्चीस (D) बाइस **Ans- (A)**

8. महमूद कौन-सा खिलौना खरीदता है ?

(A) भिश्ती (B) गुजरिया (C) साधु (D) सिपाही **Ans- (D)**

9. ईदगाह के पास किन वृक्षों की छाया है ?

(A) आम (B) ईमली (C) पीपल (D) बरगद **Ans- (B)**

10. हामिद की दादी का नाम है-

(A) सफीना (B) फातिमा (C) अमीना (D) रवीना **Ans- (C)**

11. हामिद ने कितने पैसों में चिमटा खरीदा ?

(A) एक (B) दो (C) तीन (D) चार **Ans- (C)**

12. हामिद मेले में क्या खरीदता है?

(A) मिठाई (B) खिलौना (C) चिमटा (D) कपड़ा **Ans- (C)**

13. 'ईदगाह' शीर्षक पाठ में सभी खिलौने कितने पैसे के हैं?

(A) तीन-तीन पैसे के (B) दो-दो पैसे के
(C) चार-चार पैसे के (D) एक-एक पैसे के **Ans- (B)**

14. गाँव से ईदगाह कितने कोस दूर था ?

(A) दो कोस (B) तीन कोस (C) चार कोस (D) पांच कोस **Ans- (B)**

15. हामिद के दोस्तों का नाम क्या है ?

(A) महमूद (B) नूरे (C) मोहसिन (D) सभी **Ans- (D)**

16. कौन-सी कहानी वंचित बचपन के परिस्थितियों पर मार्मिक ढंग से टिप्पणी करती है?

(A) ठेस (B) खेमा (C) खुशबू रचते हाथ (D) ईदगाह **Ans- (D)**

→ 3. 'कर्मवीर'

1. 'कर्मवीर' शीर्षक कविता में कौन परिश्रम करने में जी नहीं चुराता है?

(A) धर्मवीर (B) दानवीर (C) महावीर (D) कर्मवीर **Ans- (D)**

2. कर्मवीर चिलचिलाती धूप को क्या बना देते हैं?

(A) बादल (B) छाया (C) चाँदनी (D) अंधकारमयी **Ans- (C)**

3. कर्म के प्रति निष्ठा ही व्यक्ति की निर्धारित करती है?

(A) असफलता (B) अशिक्षा (C) सफलता (D) विफलता **Ans- (C)**

4. कर्मवीर व्यक्तियों की क्या पहचान है-

(A) कर्मनिष्ठा (B) कर्मपथ पर चलना (C) वीरता (D) उपर्युक्त सभी **Ans- (D)**

5. इस कविता के कवि कौन है-

(A) बालकृष्ण (B) हरिऔध (C) बेनीपुरी (D) कामता प्रसाद **Ans- (B)**

→ 4. बालगोबिन भगत – रामवृक्ष बेनीपुरी

1. 'बालगोबिन भगत पुत्र की मृत्यु के बाद पतोहू को रोने के बदले क्या करने को कहते हैं

(A) खुशी मनाने को (B) नाचने को (C) गाने को (D) उत्सव मनाने को **Ans- (D)**

2. पुत्र की मृत्यु होने पर बालगोबिन भगत क्या कर रहे थे?

(A) गा रहे थे (B) रो रहे थे (C) उदास थे (D) नाच रहे थे **Ans- (A)**

3. बालगोविन भगत किसे साहब मानते थे ?

(A) जायसी को (B) रहीम को (C) कबीर को (D) तुलसीदास को **Ans- (C)**

4. बालगोविन भगत कैसी रचना है?

(A) शब्दचित्र (B) रेखाचित्र (C) रिपोर्ताज (D) नाटक **Ans- (B)**

5.'रामवृक्ष बेनीपुरी' द्वारा लिखित पाठ है-

(A) ठेस (B) विक्रमशिला (C) बालगोविन भगत (D) खेमा **Ans- (C)**

6. बालगोबिन भगत के कितने बेटे हैं?

(A) एक (B) दो (C) तीन (D) चार **Ans- (A)**

7. बालगोबिन भगत की उम्र क्या थी?

(A) 60 से ऊपर (B) 40 से ऊपर (C) 30 से ऊपर (D) 20 से ऊपर **Ans- (A)**

→ 5. हुंडरू का जलप्रपात - कामता प्रसाद सिंह

1. हुन्डरु का जलप्रणत' शीर्षक पाठ साहित्य की कौन विधा है?

(A) संस्मरण (B) यात्रा-वृत्तांत (C) शब्दचित्र (D) कहानी **Ans- (B)**

2. पुरुलिया रोड से 'हुन्डरु का जलप्रपात की दूरी कितनी है?

(A) 13 मील (B) 16 मील (C) 14 मील (D) 17 मील **Ans- (A)**

3. राँची से हुंडरू का जलप्रपात की दूरी है-

(A) 25 मील (B) 20 मील (C) 15 मील (D) 27 मील **Ans- (D)**

4. स्वर्ग का एक टुकड़ा है—

(A) मुजफ्फरपुर (B) नागपुर (C) छोटानागपुर (D) सिंहभूमि **Ans- (C)**

5. राँची से पुरूलियावाली सड़क की दूरी ?

(A) 20 (B) 35 (C) 10 (D) 14 **Ans- (D)**

6. झरना की ऊंचाई कितनी है ?

(A) 246 फुट (B) 243 फुट (C) 253 फुट (D) 263 फुट **Ans- (B)**

7. स्वर्ण रेखा एक है।

(A) झरना (B) नदी (C) झील (D) तालाब **Ans- (B)**

→ 6. बिहारी के दोहे – बिहारी

1. बिहारी जी अपनी बाधा को किससे दूर करने के लिए कहते हैं?

(A) कृष्ण जी से (B) कवि से (C) राधा से (D) इनमें से कोई नहीं **Ans- (C)**

2. बिहारी जी भक्ति में किसका होना जरूरी मानते हैं?

(A) गुणों का (B) अवगुणों का (C) सुन्दरता का (D) लम्बाई का **Ans- (A)**

3. बिहारी जी के अनुसार मनुष्य श्रेष्ठ कैसे बनता है?

(A) सुन्दरता से (B) नम्रता से (C) श्रेष्ठता से (D) ऊँची आवाज से **Ans- (B)**

4. बिहारी जी किस काल के कवि थे?

(A) आदिकाल के (B) आधुनिक काल के
(C) भक्ति काल के (D) रीतिकाल के **Ans- (D)**

5. कनक शब्द का अभिप्राय यहाँ किससे है?

(A) सोना (B) गुणवान
(C) उपर्युक्त दोनों के लिए (D) इनमें से कोई नहीं **Ans- (C)**

→ 7. 'ठेस' - फनीश्वरनाथ रेणु

1. खेती-बारी के समय गाँव के किसान किसकी गिनती नहीं करते थे?

(A) हरचन को (B) सिरचन की (C) मुखन की (D) शिवलोचन की **Ans- (B)**

2. 'ठेस' शीर्षक कहानी में सिरचन क्या था ?

(A) कामचोर था (B) वकील था (C) चिकित्सक था (D) कारीगर था **Ans- (D)**

3. गाँव के लोग सिरचन को क्या समझते हैं?

(A) बीमार (B) बेगार (C) बातूनी (D) परिश्रमी **Ans- (B)**

4. 'ठेस' कहानी का नायक है—

(A) सिरचन (B) देवचन्द (C) मदन (D) सोहन **Ans- (A)**

5. मिथिलांचल की लोकसंस्कृति का प्रभावी वर्णन है—

(A) ठेस में (B) बालगोबिन भगत (C) विक्रमशिला (D) बच्चे की दुआ **Ans- (A)**

6. 'सिरचन जाति का था ?

(A) वैश्व (B) कहार (C) ब्राह्मण (D) कारीगर **Ans- (D)**

7. मानू स्टेशन पर सिरचन को किसचीज का दाम देने लगी ?

(A) मोहर छापवाली धोती का (B) कुर्ता का
(C) पायजामा का (D) जूता का **Ans- (A)**

→ 8. बच्चे की दुआ – मो० इकबाल

1. बच्चे की दुआ क्या है?

(A) उम्मीद (B) दुआ (C) प्रार्थना (D) मान **Ans- (C)**

2. बच्चे ने खुदा से क्या प्रार्थना की है?

(A) उसे बड़ा करें (B) अच्छा इन्सान बनाये
(C) उसे अपने पास बुला ले (D) बुराई से बचाये **Ans- (D)**

3. प्रस्तुत कविता में कवि शिक्षा के माध्यम से क्या संवारने की बात कहते हैं?

(A) जानवरों को (B) घर को (C) परिवार को (D) अपने आपको **Ans- (D)**

4. कवि अपनी सारी शक्तियों को लगाकर किसको सुशोभित करने की बात करते हैं?

(A) घर को (B) परिवार को (C) देश को (D) समाज को **Ans- (C)**

5. कवि किससे बचना चाहता है और किस पर चलना चाहता है?

(A) बुराई से (B) सही रास्ते पर
(C) बुरे रास्ते पर (D) (A) और (B) दोनों **Ans- (D)**

→ 9. अशोक का शस्त्र त्याग' - वंशीधर श्रीवास्तव

1. अशोक और सभी सरदार कैसे वस्त्र धारण किए हुए हैं?

(A) हरा (B) नीला (C) उजला (D) पीला **Ans- (D)**

2. 'अशोक का शस्त्र त्याग' के लेखक का क्या नाम है?

(A) शंकर शैलेन्द्र (B) फणीश्वर नाथ रेणु
(C) वंशीधर श्रीवास्तव (D) कामता प्रसाद सिंह 'काम' **Ans- (C)**

3. 'मैं स्त्रियों पर शस्त्र नहीं चलाऊँगा' किसने कहा?

(A) सेना ने (B) अशोक ने (C) पुलिस ने (D) चन्द्रगुप्त **Ans- (B)**

4. कलिंग दुर्ग खुलने पर किसकी सेना बाहर निकलती है?

(A) पुरुषों की (B) स्त्रियों की (C) यक्षों की (D) किन्नरों की **Ans- (B)**

5. 'कलिंग संबंधित है-

(A) रानी लक्ष्मीबाई से (B) पद्मा से
(C) अशोक से (D) इनमें से किसी से नहीं **Ans- (B)**

6. कलिंग युद्ध कितने साल से चल रहा ?

(A) पाँच साल (B) चार साल (C) छः साल (D) आठ साल **Ans- (B)**

→ 10. ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से – रामधारी सिंह 'दिनकर'

1. ईर्ष्या का क्या काम है?

(A) बुझाना (B) जलाना (C) नष्ट करना (D) प्रारम्भ करना **Ans- (B)**

2. लेखक ने ईर्ष्या से बचने का क्या उपाय बताया है?

(A) लिखना (B) पढ़ना (C) सुनाना (D) मानसिक अनुशासन **Ans- (D)**

3. ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम क्या है?

(A) चिन्ता (B) चिता (C) निन्दा (D) बिजली **Ans- (C)**

4. वकील साहब किससे जलते रहते हैं?

(A) अपने रिश्तेदारों से (B) अपने बच्चों से
(C) अपनी ससुराल से (D) अपने पड़ोसी से **Ans- (D)**

5. ईर्ष्या : तू न गई मेरे मन से नामक निबन्ध के लेखक कौन है?

(A) कबीरदास (B) रामधारी सिंह दिनकर
(C) तुलसीदास (D) रहीम **Ans- (B)**

6. किनके विभव की वृद्धि से वकील साहब का कलेजा जलता है?

(A) पत्नी की (B) दोस्त की (C) बीमा एजेंट की (D) भाई की **Ans- (C)**

8. ईर्ष्या का संबंध होता है-

(A) समानता से (B) अधीनता से (C) प्रतिद्वंद्विता से (D) विफलता से **Ans- (C)**

10. 'तुम्हारी निंदा वही करेगा, जिसकी तुमने भलाई की है' किसने कहा है?

(A) विवेकानन्द ने (B) दयानंद ने (C) ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने (D) रूसो **Ans- (C)**

→ 11. कबीर के पद – कबीरदास

1. कबीरदास किस काल के कवि थे?

(A) भक्तिकाल (B) आदिकाल (C) आधुनिक काल (D) रीतिकाल **Ans- (A)**

2. मोको शब्द का प्रयोग किसके लिए कहा गया है?

(A) शैतान के लिए (B) भगवान के लिए (C) इंसान के लिए (D) नादान के लिए **Ans- (B)**

3. भगवान कहाँ निवास करते हैं?

(A) आसमान में (B) भक्ति में (C) आत्मा में (D) पहाड़ों में **Ans- (C)**

4. कबीरदास ने लोगों को ब्रह्मा को कहाँ-कहाँ ढूढ़ना बेकार बताया है।

(A) मंदिर में (B) मस्जिद में (C) काबा में (D) उपरोक्त सभी में **Ans- (D)**

→ 12. विक्रमशिला – पा० पु० वि० स०

1. प्राचीन काल में 'अंग महाजनपद' के नाम से लोकप्रिय था ?

(A) वैशाली (B) मुंगेर (C) भागलपुर (D) मगध **Ans- (C)**

2. आर्यभट्ट किस विद्या के क्षेत्र में विश्व प्रसिद्ध है?

(A) खगोल विद्या (B) चनुर्विद्य (C) भूतत्व विद्या (D) वाध विधा **Ans- (A)**

3. विक्रमशिला विश्वविद्यालय का आविर्भाव किस शताब्दी में हुआ?

(A) आठवी (B) बारवी (C) सावी (D) सोलहवी **Ans- (A)**

4. 'विक्रमशिला विश्वविद्यालय के प्रांगण में कितने विश्वविद्यालय थे?

(A) चार (B) पाँच (C) छः (D) सात **Ans- (C)**

5. 'विक्रमशिला विश्वविद्यालय के प्रथम आचार्य कुलपति थे...

(A) सूरिभद्र (B) हरिभद्र (C) आर्यभट्ट (D) धर्मपाल **Ans- (B)**

6. विक्रमशिला में कितने अध्यापक रहते थे?

(A) 500 (B) 1000 (C) 1500 (D) 2000 **Ans- (B)**

→ 13. 'दीदी की डायरी'

1. संजू को डायरी लिखने की प्रेरणा किससे मिली?

(A) दीदी से (B) माँ से (C) दादी से (D) मामी से **Ans- (A)**

2. 'संजू' स्वभाव से कैसी है?

(A) गुस्सैल (B) रोनी (C) हँसमुख (D) मजाकिया **Ans- (C)**

3. संजू पिकनिक मनाने गयी...

(A) 4 जनवरी, 97 (B) 3 जनवरी, 97

(C) 5 जनवरी, 97 (D) 8 जनवरी, 97 **Ans- (B)**

4. किताबें पढ़ने का शौक है-

(A) बालगोविन भगत को (B) हामिद को (C) कसारा को (D) संजू को **Ans- (D)**

5. संजू को उसके जन्मदिन पर क्या उपहार मिलता है?

(A) कपड़ा (B) मिठाई (C) पुस्तक (D) कलम **Ans- (C)**

→ 14. पीपल

1. पीपल कविता के रचनाकार कौन है?

(A) रामधारी सिंह दिनकर (B) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

(C) गोपाल सिंह नेपाली (D) इनमें से कोई नहीं **Ans- (C)**

2. पीपल का वृक्ष अविचल खड़ा है।

(A) युगों युगों से (B) आसमान से (C) धरती से (D) घरों से **Ans- (A)**

3. पानी में कौन क्रीड़ा कर रहा है।

(A) पक्षी (B) पशु (C) हंस (D) मानव **Ans- (C)**

4. किस पेड़ के गोल-गोल पत्ते डोल-डोल कर कुछ कह रहे हैं?

(A) नीम के (B) पीपल के (C) ईख के (D) बड़ के **Ans- (B)**

5. वर्षा होने पर कोमल पत्ते हिल-हिल कर कैसी-आवाज करते हैं।

(A) सर्सर (B) मर्मर (C) उपर्युक्त दोनों (D) इनमें से कोई नहीं **Ans- (C)**

→ 15. 'दीनबन्धु 'निराला'

1. 'दीनबन्धु 'निराला' पाठ के लेखक हैं-

(A) प्रेमचन्द (B) रामवृक्ष बेनीपुरी

(C) वंशीधर श्रीवास्तव (D) आचार्य शिवपूजन **Ans- (D)**

2. दीनबन्धु निराला' पाठ की विधा है-

(A) कविता (B) निबंध (C) कहानी (D) रेखाचित्र **Ans- (B)**

3. 'दीनबन्धु' किसके नाम के साथ जोड़ा गया है?

(A) मुक्तिबोध (B) जयशंकर प्रसाद (C) निराला (D) सुमित्रानंदन पंत **Ans- (C)**

4. किनके पास धन अल्पावधि तक ही टिकता था?

(A) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (B) रामवृक्ष बेनीपुरी
(C) शिवपूजन सहाय (D) प्रेमचंद **Ans- (A)**

→ 16. खेमा

1. बाल मजदूरी पर आधारित कहानी कौन है?

(A) खेमा (B) ठेस
(C) अशोक का शस्त्र त्याग (D) बालगोबिन भगत **Ans- (A)**

2. 'मुक्ताकाशी होटल'के मालिक का नाम था-

(A) कसाई (B) कसारा (C) कासरा (D) कसग **Ans- (B)**

3. खेमा कितने वर्ष का दिखता था?

(A) सात-आठ वर्ष का (B) नौ-दस वर्ष का
(C) आठ-नौ वर्ष का (D) दस ग्यारह वर्ष का **Ans- (C)**

4. 'खेमा' की लम्बाई क्या थी?

(A) लगभग साढ़े तीन फुट (B) लगभग साढ़े पाँच फुट
(C) लगभग छह फुट (D) लगभग साढ़े चार फुट **Ans- (A)**

→ 17. खुशबू रचते है हाथ

1. 'खुशबू रचते हैं हाथ' शीर्षक कविता में किस लघु उद्योग का वर्णन है ?

(A) पटाखा (B) फुलझड़ी (C) पापड़ (D) अगरबत्ती **Ans- (D)**

2. केवड़ा, गुलाब, खस, रातरानी आदि नाम होते हैं-

(A) मिठाइयों के (B) फलो के (C) सब्जियों के (D) अगरबत्तियों के **Ans- (D)**

3. 'खुशबू रचते हैं हाथ' साहित्य की कौन-सी विधा है?

(A) कहानी (B) नाटक (C) कविता (D) निबंध **Ans- (C)**

4. 'खुशबू रचते हैं हाथ' शीर्षक कविता के रचयिता कौन हैं?

(A) शंकर शैलेन्द्र (B) बिहारी (C) अरूण कमल (D) कबीरदास **Ans- (C)**

→ 18. हौसले की उड़ान

1. कदम बड़ी होकर बनना चाहती है ?

(A) अध्यापिका (B) डॉक्टर (C) वकील (D) इंजीनियर **Ans- (B)**

2. कदम किस जिले की रहने वाली है?

(A) नालंदा (B) मुंगेर (C) कैमूर (D) बेगूसराय **Ans- (B)**

3. 'हौसले की उड़ानशीर्षक पाठ में किसके माता-पिता उसकी पढ़ाई के लिए राजी नहीं थे

(A) नगमा के (B) सीता के (C) रमा के (D) गुड़िया के **Ans- (D)**

4. कदम के पिता का नाम क्या है?

(A) नगेन्द्र मांझी (B) जितेन्द्र मांझी (C) सुरेन्द्र मांझी (D) देवेन्द्र मांझी **Ans- (B)**

→ 19. जननायक कर्पूरी ठाकुर

1. जयप्रकाश नारायण द्वारा गणित "आजाद दस्ता" के सक्रिय सदस्य कौन थे ?

(A) गोकुल ठाकुर (B) जननायक कर्पूरी ठाकुर
(C) रामलारीदेवी (D) फुलेसरी देवी **Ans- (B)**

2. लिफ्ट के ऊपर कहाँ लिखा था- "Only for Officers" ?

(A) मॉल में (B) अस्पताल में (C) देवालय में (D) सचिवालय में **Ans- (D)**

3. पहली बार कर्पूरी ठाकुर कब गिरफ्तार कर लिए गए?

(A) 28 अक्टूबर, 1943 (B) 20 सितम्बर, 1941
(C) 23 अक्टूबर, 1943 (D) 30 अक्टूबर, 1941 **Ans- (C)**

4. कर्पूरी ठाकुर ने आईए की परीक्षा पास की

(A) 1938 ई० में (B) 1939 ई. में (C) 1941 ई. में (D) 1942 ई० मे **Ans- (D)**

5. कर्पूरी ठाकुर ने कॉलेज का त्याग किया था ?

(A) 1931 ई० में (B) 1929 ई० में (C) 1942 ई० में (D) 1922 ई० में **Ans- (C)**

6. सन् 1967 में बिहार के उपमुख्यमंत्री बने-

(A) श्रीकृष्ण सिंह (B) जगन्नाथ मिश्र (C) कर्पूरी ठाकुर (D) लालू प्रसाद **Ans- (C)**

→ 20. झाँसी की रानी

1. झाँसी की रानी कविता के रचयिता कौन हैं?

(A) सुभद्रा कुमारी चौहान (B) कबीरदास
(C) तुलसीदास (D) मलिक मोहम्मद जायसी **Ans- (A)**

2. रानी लक्ष्मीबाई की कुलदेवी कहाँ थी ?

(A) गुजरात में (B) महाराष्ट्र में (C) वर्मा में (D) बंगाल में **Ans- (B)**

3. रानी लक्ष्मीबाई किसकी मुँहबोली बहन थी ?

(A) परगाना की (B) बुन्देलों की (C) नाना की (D) परनाना की **Ans- (C)**

4. बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी लक्ष्मीबाई की कौन थी?

(A) नौकरानी (B) पड़ोसी (C) सहेली (D) घरवाले **Ans- (C)**

5. लक्ष्मीबाई के पिता की कितनी सन्तानें थी ?

(A) दो (B) अकेली (C) चार (D) तीन **Ans- (B)**

→ 21. चिकित्सा का चक्कर

1. चिकित्सा का चक्कर में लेखक ने किस पद्धति का वर्णन किया है?

(A) प्राकृतिक तंत्र का (B) चिकित्सा पद्धति का
(C) खेत पद्धति का (D) इनमें से कोई नहीं **Ans- (B)**

2. लेखक की उम्र कितनी है?

(A) 35 वर्ष (B) 40 वर्ष (C) 45 वर्ष (D) 50 वर्ष **Ans- (B)**

3. लेखक के पास सदा कौन-सी औषधियाँ रहती थी?

(A)अमृतधारा (B) नींबू (C) ईनो (D) हाजमोला **Ans- (A)**

4. डॉक्टर कितनी खुराक पीने पर दर्द गायब होने की बात कहते हैं?

(A) एक (B) दो (C) तीन (D) चार **Ans- (A)**

5. डॉक्टर चूहानाथ कातर जी की फीस कितनी थी?

(A) चार रुपये (B) पाँच रुपये (C) छः रुपये (D) आठ रुपये **Ans- (D)**

→ 22. सुदामा चरित

1. सुदामा चरित के रचयिता कौन हैं?

(A) हरिवंश राय बच्चन (B) नरोत्तमदास

(C) सुभद्रा कुमारी चौहान (D) जननायक कर्पूरी ठाकुर **Ans- (B)**

2. सुदामा चरित किस भाषा में लिखित कविता है?

(A) हिन्दी में (B) संस्कृत में (C) अंग्रेजी में (D) ब्रजभाषा में **Ans- (D)**

3. सुदामा और कृष्ण जी कौन थे?

(A) राजा प्रजा (B) मालिक-नौकर (C) बाल-सखा (D) बाप-बेटा **Ans- (C)**

4. कृष्ण ने क्या देकर सुदामा को उदारता एवं मित्र भाव का परिचय दिया?

(A) चावल (B) चीवड़ा (C) खीर (D) धन **Ans- (D)**

5. कृष्ण को सुदामा के आने की सूचना किसने दी ?

(A) पत्नी ने (B) द्वारपाल ने (C) माँ ने (D) मंत्री ने **Ans- (B)**

→ 23. राह भटकते हिरण के बच्चे को

1. हिरण किससे भटकने पर रो रहा है?

(A) परिवार से (B) समूह से (C) माँ से(D) मित्रों से **Ans- (B)**

2. हिरण किसमें मदमस्त होकर राह भटक गया?

(A) खेल में (B) खाने में (C) सोने में (D) रोने में **Ans- (A)**

3. हिरण कहाँ पर बैठा रो रहा था?

(A) घर पर (B) मैदान पर (C) पहाड़ पर (D) बगीचे पर **Ans- (C)**

4. वहाँ पर जहाँ हिरण का बच्चा रो रहा है, कैसा वन है?

(A) बाँस के (B) ऑक के (C) दोनों के (D) इनमें से कोई नहीं **Ans- (C)**

5. हिरण की माँ उसे कब मिल जायेगी-

(A) शाम को (B) सुबह को (C) रात को (D) एक सप्ताह में **Ans- (B)**

विषयनिष्ठ (चैप्टर वाइज़)

1. तू जिन्दा है तो.....

➡ लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'तू जिन्दा है तो' नामक कविता में कवि ने लोगों से क्या आगाह किया?

उत्तर- 'तू जिन्दा है तो नामक कविता में कवि ने लोगों से आगाह किया कि हमें दुखदायी पलों को भूलकर, उन्नति के शिखर पर आगे बढ़ना चाहिए।

प्रश्न 2. सुबह और शाम के रंगीन आसमान को चूमकर यह धरती क्या कह रही है?

उत्तर- सुबह और शाम के रंगीन आसमान को चूमकर धरती कह रही है कि तुम शृंगार करो, मुझे सुन्दर बनाओ और जीवन में अगर कहीं भी स्वर्ग है तो सिर्फ इस धरती पर ही है और उस स्वर्ग को यहीं पर उतार दो।

2. ईदगाह

➡ लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. हामिद ने मेले से चिमटा ही क्यों खरीदा?

उत्तर- हामिद की दादी की उँगलियाँ तवे से रोटी उतारते समय जल जाती थी, इसीलिए हामिद ने मेले से चिमटा खरीदा।

प्रश्न 2. ईदगाह जाने से पहले हामिद दादी से क्या कहता है?

उत्तर- ईदगाह जाने से पहले हामिद दादी से कहता है कि "तू डरना नही अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा। तू बिल्कुल न डरना।"

प्रश्न 3. चिमटे को देखकर हामिद की दादी अमीना के मन में क्या भाव जगा?

उत्तर- चिमटे को देखकर हामिद की दादी अमीना के मन में हामिद के प्रति प्रेम का भाव उत्पन्न हो गया। उसके त्याग और विवेक को देखकर वह गद्गद हो गई।

➡ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. हामिद ने अपने मित्रों के सामने चिमटे को किस-किस रूप में उपयोग करने की बात कहीं।

उत्तर- हामिद ने अपने मित्र महमूद से कहा कि देखों कंधे पर रखने पर यह बंदूक हो जायेगा। हाथ में ले लिया तो फकीरों का चिमटा हो जायेगा। यह मंजीरों का भी काम कर सकता है और चिमटे से खिलौने पर प्रहार करने से तो वह चूर-चूर हो हो जायेगे लेकिन चिमटे का बाल भी बाँका नहीं होगा, क्योंकि यह चिमटा बहादुर शेर है।

प्रश्न 2. चिमटा खरीदने से पहले हामिद के मन में क्या-क्या विचार आये का वर्णन कीजिए।

उत्तर - चिमटा खरीदने से पहले तो हामिद का मन भी खिलौनों की ओर आकर्षित हो गया था, किन्तु उसने सोचा कि उसके पास तो केवल तीन पैसे ही हैं और खिलौने दो पैसे के हैं। खिलौने तो हाथ से छूटकर यदि गिर जाये तो चूर-चूर हो जायेगा और पानी पड़ा तो इनका सारा-रंग ही घुल जायेगा। मिठाई की दुकान पर सजी मिठाई को देखकर भी हामिद का जी ललचाने लगा, किन्तु उसके पास पैसों का अभाव था।

3. कर्मवीर

➡ लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कर्मवीर कविता के अनुसार अपने देश की उन्नति के लिए आप क्या-क्या करेंगे।

उत्तर- देश की उन्नति करने के लिए हम कठिन-से-कठिन काम को भी पूरा करने में पीछे नहीं हटेंगे। पर्वतों को काटकर मेहनत के द्वारा सड़कें बना देंगे। मरुभूमि (रेगिस्तान) को हरा-भरा कर देंगे। जंगल में भी महामंगल का निर्माण कर देंगे।

प्रश्न 2. परिश्रम के द्वारा आप मनोवांछित लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं तो कैसे-वर्णन कीजिए।

उत्तर- परिश्रमी व्यक्ति जिस कार्य को पूरा करते हैं, उसे पूरा किये बिना नहीं छोड़ते हैं। का अपने लक्ष्य के बीच में आने वाली किसी भो कठिनाई या बाधा के आने पर रुकते नहीं है, जब तक कि उन्हें अपना लक्ष्य प्राप्त न हो जाये। यह पर्वतों के समान बड़ी-बड़ी कठिनाइयों को

भी हँसते-हँसते पार कर जाते हैं।

➞ **दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

प्रश्न 1. कर्मवीर कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए-

उत्तर- कर्मवीर शीर्षक कविता में कवि ने कर्म करने को प्रधानता दी है क्योंकि कर्म के द्वारा हो हम कठिन- से-कठिन काम को सरलतापूर्वक कर जातें हैं। कर्म के प्रति निष्ठा होना ही व्यक्ति की सफलता का निर्धारण करता है। कर्मवीर व्यक्ति को कठिनाइयों से नहीं डरते हैं। वह निरन्त कर्मपथ पर बढ़ते जाते हैं। काम को पूर करने के लिए वह किसी पर निर्भर नहीं होते हैं। मन में आते हो वह अपने कार्य को शुरू कर देते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि वे समय को बर्बाद नहीं क हैं। काम के स्थान पर बातों में समय नहीं खोते हैं। धूप को भी वे अपनी मेहनत के द्वारा मातों शीतल बना देते हैं। जरूरत पड़ने पर वे शेर का भी सामना करने से पीछे नहीं हटते हैं। किसी दूरी को तय करने में वे थकावट महसूस नहीं करते हैं। जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जायें वे मेहनत करने से पीछे नहीं हटते हैं। पर्वतों को काटकर सड़क का निर्माण करना मानों कर्मवी व्यक्ति के लिए कोई कठिन काम नहीं है। वह कार्य स्थल के बारे में कभी भी ये नहीं पूछते की कहाँ पर है। मरुभूमि में भी वह फूल खिला कर मानों हरा-भरा बनाने की क्षमता रखते हैं। वह हर असंभव कार्य को संभव बनाने की क्षमता रखते हैं। वास्तव में यह 'कर्मवीर' कविता कठिनाइयों से जूझते हुए उन कर्मशील लोगों को ही बात करती है जो एक नई सभ्यता और संस्कृति की रचना (निर्माण) करते हैं और कवि अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी ने इस कविता में ये हो स्पष्ट किया है कि कर्म के प्रति सच्ची लगन ही व्यक्ति की सफलता का निर्धार करती है।

4. बालगोबिन भगत

➞ **लघु उत्तरीय प्रश्न**

प्रश्न 1. बालगोबिन भगत 'साधु' थे या गृहस्थ ?

उत्तर- बालगोबिन भगत साधु नहीं बल्कि गृहस्थ थे।

प्रश्न 2. बालगोबिन भगत किस कद के थे?

उत्तर- बालगोबिन भगत मँझोले कद के थे।

प्रश्न 3. बालगोबिन भगत के लेखक कौन है?

उत्तर- बालगोबिन भगत के लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी जी है।

प्रश्न 4. बालगोबिन भगत की प्रभातियाँ कब से शुरू होती थी और कब तक चला करती थी

उत्तर- बालगोबिन भगत की प्रभातियाँ कातिक से शुरू होती थी और फागुन तक चला करती थी।

प्रश्न 5. बालगोबिन की आस्था किसमें थी?

उत्तर- बालगोबिन संतसमागम और लोक-दर्शन में आस्था रखते थे।

प्रश्न 6. बालगोबिन भगत किसके उपासक थे?

उत्तर- बालगोबिन भगत कबीर के उपासक थे।

प्रश्न 7. बालगोबिन भगत को गृहस्थ होने के पश्चात् भी साधु क्यों कहा जाता था?

उत्तर- बालगोबिन भगत ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें गृहस्थ होने के बाद भी साधु के समान माना जाता था, क्योंकि वे कबीर को अपना 'साहब' (गुरु) मानते थे। उन्हीं के पदों को गाते थे, कभी झूठ नहीं बोलते थे, और सब के साथ अच्छा व्यवहार करते थे। वे सांसारिक मोह-माया से परे थे। उन्हें लोभ लालच भी नहीं था। इस प्रकार वे साधु की सभी परिभाषाओं में खरे उतरते थे। इसी कारण गृहस्थ होने के पश्चात् भी उन्हें साधु कहा जाता था।

प्रश्न 8. भगत के अपने बेटे की मृत्यु होने के पश्चात् भगत ने अपनी भावनाओं को किस तरह व्यक्त किया?

उत्तर- भगत के बेटे की मृत्यु होने पर भगत रोयें नहीं अपितु वह सुर-संगीत में लीन हो गये। वे उसी प्रकार गीत गाते अपनी पतोहू के पास चले गये और उससे भी रोने के बदले उत्सव मनाने को कहने लगे, क्योंकि उनका मानना था कि मृत्यु होने के पश्चात् आत्मा अपने प्रियतम परमात्मा के पास चली जाती है, एक वियोगिनी को उसका प्रेमी मिल जाता है, भला इससे बढ़कर खुशी की बात और क्या हो सकती है।

प्रश्न 9. अपनी पुत्रवधू के द्वारा पुत्र को मुखाग्नि दिलवाना भगत के व्यक्तित्व की कौन-सी विशेषता का वर्णन करता है?

उत्तर- भगत एक विशेष व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। उनका व्यक्तित्व निराला था, क्योंकि वे स्त्री व पुरुष के बीच कोई अन्तर नहीं मानते थे। उनका तो मानना था की संसार के सभी जीवों में

परमात्मा का निवास है। वे वेदों के अनुसार पुत्र को ही अपने पिता को मुखाग्नि देने का अधिकार है, इसे वे नहीं मानते थे। उनके अनुसार एक पत्नी को भी पति के श्राद्ध-कर्म का अधिकार है। इसी मान्यता के अनुसार उन्होंने अपने पुत्र की मृत्यु पर अपनी पतोहू से ही मुखाग्नि दिलवाई।

➡ **दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

प्रश्न 1. बालगोबिन भगत कबीर दास को अपना 'साहब' मानते थे। इसके क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर- कबीरदास के समान ही भगत भी निराकार ब्रह्म में विश्वास करते थे। वे कबीर को ही अपना इ मानते थे। भगत कबीरदास के द्वारा रचित पदों को गाते थे, और उसमें ही पूर्व रूप से खो जाते थे। भगत कबीर के लिए 'साहब' शब्द का प्रयोग करते थे, और 'साहब' शब्द भगवान के लिए प्रयोग किया जाता है, कबीर को भगत अपना भगवान ही मानते थे। भगत का आचरण कबीर मत के अनुरूप ही था। अतः कबीर को 'साहब' मानने का यही कारण था।

प्रश्न 2. 'बालगोबिंद भगत' पाठ का सारांस अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-

सारांश

बालगोबिन भगत मँझोले कद के एक गोरे-चिट्टे आदमी थे। वे साठ वर्ष की आयु के थे। उनके बाल सफेद हो गये थे। वे कपड़े कम पहनते थे। केवल कमर में लंगोटी और सिर पर कनफटी टोपी पहनते थे।

भगत गृहस्थ होकर भी साधु के समान थे। वे कबीर को 'साहब' मानते थे। कबीर के द्वारा रचित गीतों को गाते थे, और उनके द्वारा बताये गये रास्ते पर चलते थे। उनके खेत में जो पैदावार होती थी उसे वह घर से चार कोस की दूरी पर बने कबीरपंथी मत को भेंट कर देते थे, और प्रसाद स्वरूप जो कुछ भी मिलता था उसी से अपनी गुजर-बसर किया करते थे। आषाढ़ के महीने में जब रिमझिम रिमझिम वर्षा होती थी, तो बालगोबिन खेत में काम करते हुए मधुर स्वर में कबीर के पदों को गाया करते थे। जब उनकी खंजड़ी डिमक-डिमक बजती और वे स्वयं गाते थे "गोदी में पियवा,

चमक उठे सखिया चिहुँक उठ ना।" तो सारा संसार घोड़े बेचकर सोया होता था, किन्तु बालगोबिन का संगीत जाग रहा है। गर्मी के मौसम में तो उनकी 'संझा' उमस से भरी शाम को भी शीतल कर देती थी। लोग उनके आँगन में जमा होकर 'साहब' के गीतों में रंग जाते थे और सारा आँगन नृत्य व संगीत से ओत-प्रोत हो जाता था।

यहीं नहीं बालगोबिन भगत की संगीत साधना का चरमोत्कर्ष तो उस दिन देखा गया जिस दिन उसका बेटा मरा। बालगोबिन के एक ही बेटा था। उसने अपने बेटे की शादी एक सुशील कन्या से कराई। उसने घर की प्रबंधिका बनकर भगत को दुनियादारी से निवृत्त कर दिया, किन्तु दुर्भाग्यवश भगत का वह इकलौता पुत्र मर गया। पतोहू रो रही है, और भगत है कि अपनी ही धुन में गीत गए जा रहे हैं। गाते-गाते वे अपनी पतोहू के पास जाकर उसे भी उत्सव मनाने को कहते हैं। उनका कहना है कि आत्मा परमात्मा के पास चली गई है। भगत ने बेटे का क्रियाकर्म साधारण रूप में किया। पतोहू के भाई को बुलाकर उसके साथ भेज दिया, और उसे उसकी दूसरी शादी करने का आदेश दिया। पतोहू के यह कहने पर बुढ़ापे में कौन आपके लिए भोजन बनाएगा, अगर बीमार पड़े तो कौन एक चुल्लू पानी भी देगा? किन्तु भगत ने कहा कि तू जा, नहीं तो मैं इस घर को छोड़कर चला जाऊँगा। उनकी इस दलील के आगे बेचारी की एक न चली। बालगोबिन भगत की मृत्यु भी इसी प्रकार हुई। वे प्रत्येक वर्ष गंगा स्नान के लिए तीस कोस पैदल चलते हुए रास्ते में खंजड़ी बजाते, गाते चलते थे। गंगा स्नान से लौटने के बाद इस बार वे बीमार पड़े, और शाम में गीत गाते-गाते इस दुनिया को छोड़कर चले गये।

भोर में जब लोगों ने गीत नहीं सुना, तो जाकर देखा तो बालगोबिन भगत नहीं रहे सिर्फ उनका पंजर पड़ा था।

5. हुंडरू का जलप्रपात

➡ लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. हुंडरू का झरना कहाँ पाया जाता है?

उत्तर- हुंडरू का झरना छोटा नागपुर में पाया जाता है।

प्रश्न 2. हुंडरू में पानी कितने फुट नीचे गिरता है?

उत्तर- हुंडरू के प्रपात में पानी 243 फुट नीचे गिरता है।

प्रश्न 3. पुरुलिया रोड से हुंडरू की दूरी कितनी है?

उत्तर- पुरुलिया रोड से हुंडरू की दूरी 13 मील है।

प्रश्न 4. हुंडरू का जलप्रपात किस गद्यकार की रचना है?

उत्तर- हुंडरू का जलप्रपात कामता प्रसाद सिंह 'काम' जी की रचना है।

प्रश्न 5. हुंडरू का जलप्रपात वास्तव में क्या है?

उत्तर- 'हुंडरू का जलप्रपात' आदिवासी संस्कृति की विशेषताओं को उभारने वाला एक यात्रा वृत्तान्त है।

प्रश्न 6. 'हुंडरू का जलप्रपात' गद्य की कौन-सी विद्या है?

उत्तर- हुंडरू का जलप्रपात गद्य की यात्रा वृतान्त विधा है।

प्रश्न 7. हुंडरू के प्रपात का दृश्य किस प्रकार का है?

उत्तर- हुंडरू का पानी कहीं साँप की तरह चक्कर काटता है, कहीं हिरण की तरह छलाँग भरता है और कहीं बाघ की तरह गरजता हुआ नीचे गिरता है।

प्रश्न 8. राँची से हुंडरू की दूरी कितनी है?

उत्तर- राँची से हुंडरू की दूरी 27 मील दूरी है।

प्रश्न 9. हुंडरू का झरना किस प्रकार बना है?

उत्तर- हुंडरू का झरना स्वर्ण रेखा जिसके उद्गम स्थान से 50 मील आगे आकर हुंडरू का यह झरना है। यह नदी मानों पहाड़ को पार करने की चेष्टा से पहाड़ पर चढ़ती है, फलतः पानी की एक से अधिक जलधाराएँ हो जाती है, और जब सारी धाराएँ एक होकर पहाड़ से नीचे की ओर गिरती है, तो वह दृश्य अनोखा हो जाता है, और यही जलप्रपात हुंडरू के जलप्रपात के नाम से प्रसिद्ध है।

प्रश्न 10. जैसे हुंडरू का झरना वैसे उनका मार्ग' इस उक्ति की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- प्रस्तुत उक्ति में लेखक 'कामता प्रसाद' ने हुंडरू के जलप्रपात का मार्मिक चित्र वर्णित किया है। लेखक के द्वारा हुंडरू जलप्रपात और उसके मार्ग में एक समानता को बताने

का प्रयत्न किया है, क्योंकि हुंडरू का जलप्रपात नीचे से ऊपर की ओर जाता है और ऊपर से नीचे की ओर भी आता है, अर्थात् पानी उछलता-कूदता धूम मचाता हुआ पत्थरों के सीने को चीरता हुआ आगे बढ़ता जाता है, और जिस तरह जलप्रपात का वेग है, उसी प्रकार उसके मार्ग में भी संकरापन और पत्थरों का अम्बार लगा हुआ है। वास्तव में हुंडरू का जल मार्ग जिस तरह है, उसी तरह उसकी धारा भी है।

➡ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. हुंडरू का जलप्रपात' का सारांश, अपने शब्दों में लिखिए-

उत्तर-

सारांश

हुंडरू का जलप्रपात 'कामता प्रसाद सिंह काम' जी द्वारा लिखा गया एक यात्रा वृतान्त विद्या है। पहाड़, नदी, जंगल की सुन्दरता के साथ-साथ ही उस स्थान में प्राप्त अबरक, कोयला खदान, और दर्शनीय झरने का भी लेखक ने बड़ा रोचक और सजीव चित्र प्रस्तुत किया है।

हुंडरू का जलप्रपात छोटा नागपुर में है। जो राँची से 27 मील की दूरी पर है। राँची से हुंडरू जाने के मार्ग में प्रकृति का सुन्दर नजारा देखने को मिलता है। वहाँ जंगलों के बीच में पहाड़ी और उस पहाड़ी पर खड़ी झाड़ियाँ मन को मोह लेती है। पत्थर की छाती को चीरकर जो पानी निकलता है वह स्वर्ण रेखा है। नदी पहाड़ पर चढ़ने की चेष्टा करती है, जिससे पानी कई धाराओं में बँटता है, और जब सारी जल धाराएँ एक होकर पहाड़ से गिरती है तो वही जलप्रपात कहलाता है। इस झरने की ऊँचाई 243 फुट है। वह चमकदार पानी ऐसा प्रतीत होता है जैसे पानी के चक्कर और भँवर में पिसकर पत्थर का सफेद चूर्ण नीचे गिर रहा हो, और कहीं-कहीं 'चट्टान' पर जल की प्रबलधारा गिरती है, तो संघर्ष में मानों इन्द्रधनुष जैसा रंग उत्पन्न हो जाता है। तब ऐसा प्रतीत होता है कि मानों सतरंगा पानी हवा में उड़कर कहीं विलीन होता जा रहा है या मानों हवा में उड़ता हुआ इन्द्रधनुष फरफरा रहा है। बड़े झरने की बगल में एक इंच मोटी एक धारा ऊपर से नीचे धीरे-धीरे पत्थरों पर से उतरती सी प्रतीत होती है जैसे महादेव जी पर कोई भक्त दूध चढ़ा रहा हो। ऐसा कहा जाता है कि शिवजी की बारात शायद इसी राह से गुजरी थी, और उनका स्वागत करने को पर्वत ने इसी गुलाबपाश का प्रबंध किया था, और वही गुलाबपाश शाश्वत रूप से अभी भी झर रहा है।

झरने के आगे की घाटी का दृश्य तो और भी मनोरम है। पहाड़ों के बीच में एक पतली सी नदी बहती है जैसे थर्मामीटर में एक पतला सा पारा हो। उसके आगे एक पहाड़ है। उस नदी को मानों पहाड़ ललकार रहा हो। कि तुम आगे आओं और मुझे लाँधकर आगे बढ़ों। नदी के इधर-उधर पत्थरों का बड़ा ढेर है जिस पर बड़ी झाड़ी उगी है, और यह दृश्य बड़ा ही मनमोहक लगता है। हुंडरू नदी का पानी कहीं पर साँप की तरह चक्कर काटता है, और कहीं हिरण की तरह छलांग भरता है और कहीं पर बाघ की तरह गरजता हुआ नीचे की ओर गिरता है। यह दृश्य बड़ा ही भयंकर है, और धीरे-धीरे धीमी गति से इसका पानी नदी के रूप में दिखाई पड़ता है जो शैलानियों के लिए बड़ा आकर्षक है। यहाँ पत्थर भी दो प्रकार के है एक तो वे जिनकी छाती को चीरकर पानी निकलता है, और दूसरा जिस पर पानी की धारा गिरती है। 243 फुट का यह प्रपात भी निराला है। सुन्दरता यहाँ साकार हो गई है। अनोखी शोभा है जो कभी पुरानी नहीं पड़ती। हुंडरू से सात मील पर एक प्रपात देखा गया है लेकिन वहाँ का मार्ग इतना बीहड़, घनघोर और भंयकर है कि जंगल के उस भाग में पहुँचना भी कठिन है।

6. बिहारी के दोहे

➡ लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. शरीर की परछाई पड़ते ही कृष्ण का रूप कैसा हो जाता है?

उत्तर- शरीर की परछाई पड़ते ही कृष्ण का रूप श्याम वर्ण हो जाता है।

प्रश्न 2. मनुष्य और नल की प्रकृति कैसी है?

उत्तर- मनुष्य और नल की प्रकृति एक समान होती है।

प्रश्न 3. बिहारी किस काल के कवि थे।

उत्तर- बिहारी रीतिकाल के कवि थे। दुर्जन मनुष्य के संग रहने से अच्छी बुद्धि नहीं मिलती है। इसकी उपमा में

प्रश्न 4. कवि ने क्या कहा है?

उत्तर- दुर्जन के साथ रहने से अच्छी बुद्धि नहीं मिल सकती। इसकी उपमा में कवि ने कहा है कि यदि कपूर में हींग मिला दी जाये, तो हींग में सुगंध नहीं होती।

प्रश्न 5. बिहारी ने 'कनक' शब्द का प्रयोग किन-किन अर्थों में किया है?

उत्तर- बिहारी ने 'कनक' शब्द का प्रयोग सोना और धतूरा दो रूपों में किया है। सोना गुणवान के लिए और धतूरा मूर्ख के लिए किया जाता है।

प्रश्न 6. बिहारी जी के अनुसार गुण नाम से ज्यादा बड़ा होता है। कैसे?

उत्तर- बिहारी जी के अनुसार गुण नाम से बड़ा होता है जैसे सोना और धतूरा दोनों का रंग एक समान होता है, किन्तु सोने के गुण के कारण उससे गहना बनता है, किन्तु धतूरे से गहना नहीं बनाया जा सकता है।

➡ **दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

प्रश्न 6. 'बिहारी के दोहे' नामक पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- बिहारी जी कहते हैं कि है राधा मेरी बाधाओं को उसी प्रकार से दूर कर देना जिस प्रकार से आपके शरीर की परछाई पड़ते ही कृष्ण का रंग श्यामवर्ण हो जाता है, और बिहारी जी के अनुसार माला को जपना, तिलक को लगाना किसी भी काम का नहीं है, यदि तुम्हारा मन कच्चा है क्योंकि मन व्यर्थ ही इधर-उधर भटकता रहता है, और मनुष्य और नल की प्रकृति एक समान होती है। वे जितना नीचे होकर चलती है उतना ही ऊँचा होता है। अर्थात् नम्रतापूर्ण व्यवहार करने से ही मनुष्य श्रेष्ठ बनता है और बुरी बुद्धि वाले के संग रहने से अच्छी बुद्धि प्राप्त करना कठिन है। जैसे यदि हींग को कपूर के साथ रखने पर भी सुगंध नहीं निकलती है। बिना गुण के कोई बड़ा व्यक्ति नहीं बनता है चाहे उसकी प्रशंसा कितनी भी की जाये। बिहारी जी के अनुसार सोना धतूरा से कहता है कि तुम्हारा रंग सोने के समान होने पर भी गहना नहीं बनाया जा सकता है, अर्थात् बिना गुण के कोई बड़ा नहीं हो सकता। दुःख में घबराना नहीं चाहिए और सुखी होने पर भगवान को न भूलना चाहिए अर्थात् सुख-दुख में समान रूप से रहना चाहिए और सुख-दुख को एक समान रूप से स्वीकार करना चाहिए।

7. ठेस

➟ लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'ठेस' कैसी कहानी है?

उत्तर- 'ठेस' एक आंचलिक कहानी है।

प्रश्न 2. 'ठेस' कहानी का प्रमुख पात्र कौन है?

उत्तर- 'ठेस' कहानी का प्रमुख पात्र सिरचन है।

प्रश्न 3. सिरचन के गाँव के किसान सिरचन को क्या समझते हैं?

उत्तर- गाँव के किसान सिरचन को बेगार समझते हैं।

प्रश्न 4. 'ठेस' शीर्षक कहानी के लेखक कौन हैं?

उत्तर- 'ठेस' शीर्षक कहानी के लेखक 'फणीश्वर नाथ रेणु' हैं।

प्रश्न 5. सिरचन अपने काम में कैसा था?

उत्तर- सिरचन अपने काम में दक्ष था।

प्रश्न 6. सिरचन बात करने में कैसा था?

उत्तर- सिरचन बात करने में कारीगर था।

प्रश्न 7. 'ठेस' शीर्षक कहानी में आये हुए पात्रों के नाम लिखिए?

उत्तर- 'ठेस' शीर्षक कहानी में सिरचन और मानू का नाम उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त अनाम पात्रों में माँ, छोटी भाभी, चाची आदि भी हैं।

प्रश्न 8. कहानी के प्रमुख पात्र सिरचन को पान का बीड़ा किसने दिया था?

उत्तर- कहानी के प्रमुख पात्र सिरचन को पान का बीड़ा मानू ने दिया था।

➟ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'ठेस' कहानी के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण करें।

उत्तर- 'ठेस' शीर्षक कहानी का प्रमुख पात्र सिरचन है। सिरचन एक कलाकार है। इसके साथ वह स्वाभिमानी भी हैं बिना किसी मजदूरी के पेटभर भात पर काम करने वाला कारीगर। दूध में कोई मिठाई न मिले, तो कोई बात नहीं किन्तु बात में जरा भी झाल तक वह नहीं

बरदाश्त कर सकता। मानू की विदाई के अवसर पर घरवालों की माँग थी तीन जोड़ी फैशनेबल चिक और पटेर की दो शीतल पाटियों की। सिरचन को बुलाकर स्वयं लेखक की माँ ने उससे इसे तैयार करने को कहा और बदले में उसे मोहर छाप वाली नई धोती देने का वादा भी किया। सिरचन तुरन्त अपने काम में जुट गया। काम करते हुए सिरचन को मंझली भाभी ने चिउरा और गुड़ दिया। माँ के कहने पर मुट्ठी भर बुंदियाँ भी वह सूप में फेंककर चली गई। सिरचन इससे आहत होकर बोला-मंझली बहूरानी क्या अपने मैके से आई हुई मिठाई भी उसी तरह हाथ खोलकर बाँटती है क्या? वह रोने लगी इस पर चाची ने सिरचन को बहुत कुछ अपमानजनक बातें कहीं, सिरचन काम छोड़कर चला गया, क्योंकि कलाकार का दिल कोमल होता है। अतः कलाकार के दिल को ठेस लगी तो वह काम छोड़कर चला गया। अर्थात् सिरचन काम से गायब हो गया। सिरचन ने मानू के लिए घर पर ही फैशनेबल चिक और शीतल पाटी तैयार की और जाते वक्त मानू को स्टेशन पर दे दिया। मानू ने वादे के अनुसार मोहर छापे वाली
धोती का दाम देने लगी तो सिरचन ने लेने से इन्कार कर दिया। वास्तव में सिरचन का चरित्र अनोखा है। वह स्वाभिमानी और सहृदय है। उसके अन्दर पूर्ण विवेक है। सिरचन एक सच्चा कलाकार भी है। वह वाचाल, विवेकी और अपने कार्य में सिद्धहस्त भी है।

8. बच्चे की दुआ

➡ लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'बच्चे की दुआ' कविता में बच्चे की दुआ क्या है?

उत्तर- 'बच्चे की दुआ' कविता में बच्चे की दुआ एक प्रार्थना गीत है।

प्रश्न 2. 'बच्चे की दुआ' कविता में किसकी कल्पना की गई?

उत्तर- 'बच्चे की दुआ' कविता में दर्दमंद और वंचितों की हिफाजत का संकल्प लिया गया है तथा स्वयं को बुराई से बचाकर नेक राह पर चलने की दुआ माँगी गयी है।

प्रश्न 3. 'बच्चे की दुआ' कविता में बच्चों ने अल्लाह से क्या प्रार्थना की है?

उत्तर- 'बच्चे की दुआ' कविता में बच्चों ने अल्लाह से प्रार्थना की है कि उसे बुराई से बचाओं और सही राह पर चलने की प्रेरणा देते रहना।

प्रश्न 4. 'बच्चे की दुआ' कविता के रचयिता कौन हैं?

उत्तर- 'बच्चे की दुआ' कविता के रचयिता मो० इकबाल हैं।

प्रश्न 5. 'बच्चे की दुआ' कविता में कवि ने किन-किन चीजों की चाह रखी है?

उत्तर- 'बच्चे की दुआ' कविता में कवि ने चाहा है कि मेरे दम से संसार का अंधेरा दूर हो जाये। संसार की शोभा बढ़ जाये, मेरा काम गरीबों की भलाई करना तथा वृद्धों की सेवा करना व उनसे प्यार करना हो। मैं हमेशा बुराइयों से दूर रहकर नेक राह पर चलता रहूँ।

प्रश्न 6. यदि आपको ईश्वर से कुछ माँगने की जरूरत होगी तो आप क्या-क्या माँगना चाहेंगे?

उत्तर- यदि ईश्वर से हमें कुछ माँगने की जरूरत होगी तो हम ईश्वर से कहेंगे की दर्दमंद और वंचितों की हिफाजत (रक्षा) कर सकें और मुझे बुराइयों से बचाकर सही रास्ते पर चलने की शक्ति दें।

➟ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न. 'बच्चे की दुआ' गीत का सारांश लिखिए।

उत्तर- 'बच्चे की दुआ' यह एक प्रार्थना गीत है। इस गीत में दर्दमंद और बच्चों की हिफाजत (रक्षा) करने का संकल्प लिया गया है। बच्चे ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हे ईश्वर आप मुझे इतनी ताकत देना जिससे मैं संसार का अंधेरा दूर कर सकूँ और उससे चारों ओर उजाला फैल जाये। मैं अपने वतन की शोभा बन सकूँ उसी प्रकार जिस प्रकार एक सुन्दर व सुगन्धित फूल से बगीचे की सुन्दरता बढ़ जाती है। मैं सभी गरीबों और वंचितों की रक्षा कर सकूँ। दर्दमंदों व बूंदों से मैं प्यार कर सकूँ और उनकी सेवा कर सकूँ। हे ईश्वर! मुझे बुराइयों से बचाकर सही मार्ग दिखाना मेरी इतनी ही इच्छा है।

9. अशोक का शस्त्र-त्याग

➟ लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. अशोक का शस्त्र त्याग में पद्मा कौन थी?

उत्तर- अशोक का शस्त्र त्याग में पद्मा कलिंग की राजकुमारी थी।

प्रश्न 2. अशोक ने कलिंग पर आक्रमण क्यों किया?

उत्तर- अशोक कलिंग पर विजय हासिल करके उसे अपने राज्य में मिलाना चाहते थे।

प्रश्न 3. 'अशोक का शस्त्र त्याग' किस गद्यकार की रचना है?

उत्तर- 'अशोक का शस्त्र त्याग' वंशीधर श्रीवास्तव की रचना है।

प्रश्न 4. 'अशोक का शस्त्र त्याग' में कलिंग युद्ध का क्या परिणाम हुआ?

उत्तर- कलिंग युद्ध में लाखों लोग मारे गए। पूरी धरती खून से भीग गई। उस युद्ध की विभीषिका से अशोक का दिल पिघल गया और वहाँ उसने शस्त्र फिर न उठाने की प्रतिज्ञा की। उसने अहिंसा के मार्ग पर चलने की शपथ ली और उसने तभी से बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया।

प्रश्न 5. अशोक और कलिंग के बीच कितने दिनों से युद्ध जारी था?

उत्तर- अशोक और कलिंग के बीच लगातार चार सालों से युद्ध जारी था।

प्रश्न 6. 'अशोक का शस्त्र त्याग' गद्य की कौन-सी विधा है?

उत्तर- 'अशोक का शस्त्र त्याग' गद्य की एकांकी विधा है।

प्रश्न 7. अशोक से बदला लेने का पद्मा के पास अच्छा अवसर था फिर भी उसने अशोक को जीवित क्यों छोड़ दिया?

उत्तर- स्त्रियों की सेना से लड़ना अशोक स्वयं अस्वीकार कर देता है और उनके सामने वह शस्त्र त्याग देता है। पद्मा को अशोक से पिता की मृत्यु का बदला लेने का अवसर था, लेकिन उसने फिर भी अशोक को जिन्दा छोड़ दिया क्योंकि अशोक निहत्था था।

प्रश्न 8. पद्मा के द्वारा युद्ध के लिए ललकारने पर भी अशोक ने युद्ध करना स्वीकार क्यों नहीं किया?

उत्तर- पद्मा अशोक को युद्ध करने के लिए ललकारती है, किन्तु अशोक ने युद्ध करना स्वीकार नहीं किया क्योंकि अशोक स्त्रियों से युद्ध करना शास्त्र सम्मत नहीं समझता था।

➟ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'अशोक का शस्त्र त्याग' एकांकी का सार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- 'अशोक का शस्त्र त्याग' वंशीधर श्रीवास्तव द्वारा रचित एकांकी है। अशोक अपनी राज्य सीमा के विस्तार करने के लिए कलिंग पर हमला करता है। कलिंग की सेना की युद्ध में

हार हो जाती है और कलिंग नरेश भी युद्ध में मारे जाते है, किन्तु कलिंग का दुर्ग वे खुलवा नहीं पाते हैं। सैनिक अशोक को आकर यह सूचना देते हैं कि कलिंग नरेश मारे गये है, किन्तु कलिंग का दुर्ग अभी तक खुल नहीं पाया है। लगातार चार साल तक युद्ध चलने के बाद भी कलिंग का दुर्ग अविजित ही रहा। अशोक स्वयं युद्ध का संचालन करने के लिए सैनिकों के साथ आगे बढ़ते हैं। कलिंग का फाटक खुलता है तभी अशोक के सामने पद्मा के नेतृत्व में स्त्रियों की फौज आ खड़ी होती है। उधर अशोक स्त्रियों की सेना को देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं। अशोक स्त्रियों पर आक्रमण करना शास्त्र के विरुद्ध मानते हुए शस्त्र त्याग कर देते हैं और पद्मा शस्त्रहीन अशोक पर हमला नहीं करते हुए अपने दुर्ग को लौट जाती है। उधर जब अशोक ने युद्ध की विभीषिका को देखा तो उससे घबराकर अशोक बौद्धधर्म की शिक्षा लेते हैं। इसके पश्चात् कथानक का पटापेक्ष होता है।

प्रश्न 2. सैनिकों को उत्साहित करने के लिए राजकुमारी पद्मा और सम्राट अशोक के द्वारा कही गई बातों को तुलनात्मक रूप से बताइये की अधिक प्रभावशाली कौन है?

उत्तर- राजकुमारी पद्मा और अशोक के द्वारा सैनिकों को उत्साहित करने में बड़ा अन्तर है। अशोक ने अपने सैनिकों को बुलाकर कहा कि या तो हम कलिंग के दुर्ग पर अपना अधिकार कर लेंगे या फिर मौत के मुँह में समा जाएँगे। उधर पद्मा ने अपने सैनिकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जिस सेना ने तुम्हारे पिता, भाई, पुत्र और पति की हत्या की है अर्थात् जो तुम्हारे अपने परिजनों का हत्यारा है, वह तुम्हारे सामने खड़ा है और उससे तुम्हें लोहा लेना है। अशोक जन्मभूमि के पराधीन होने से पहले अपनी मृत्यु चाहता है जबकि पद्मा कलिंग की स्वाधीनता के लिए अपने सर्वस्व को न्योछावर करने के लिए आह्वान करती है। अतः पद्मा का कथन अत्यधिक प्रभावशाली है।

10. ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से

➟ लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' किस गद्यकार की रचना है?

उत्तर- 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचना है।

प्रश्न 2. ईर्ष्या का सबसे बड़ा काम क्या है?

उत्तर- ईर्ष्या का सबसे बड़ा काम जलाना है।

प्रश्न 3. ईर्ष्या क्या है?

उत्तर- ईर्ष्या मनुष्य का चारित्रिक दोष नहीं बल्कि वह आनंद में बाधक है।

प्रश्न 4. 'तुम्हारी निंदा वहीं करेगा, जिसकी तुमने भलाई की है? यह किसने कहा है?

उत्तर- यह ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने कहा है।

प्रश्न 5. ईर्ष्या से बचने का उपाय क्या है?

उत्तर- ईर्ष्या से बचने का उपाय मन पर अनुशासन है।

प्रश्न 6. 'वकील साहब को ईर्ष्या किससे है और क्यों?

उत्तर- वकील साहब को बीमा एजेंट से ईर्ष्या है क्योंकि वे उसके वैभव से जलते रहते हैं और सोचते हैं कि उसकी सारी सुविधा की वस्तुएँ उनकी हो जाएँ।

प्रश्न 7. वकील साहब अपने आप से सुखी क्यों नहीं हैं?

उत्तर- वकील साहब स्वयं भी वैभवशाली हैं किन्तु फिर भी वे अपने पड़ोसी के वैभव सेजलते थे। उनकी पड़ोसी के प्रति ईर्ष्या ही उनका सबसे बड़ा दुख का कारण है। अतः वे ईर्ष्या के कारण सुखी नहीं हैं।

प्रश्न 8. ईर्ष्या की बड़ी बेटी किसे और क्यों कहा गया है?

उत्तर- ईर्ष्या की बड़ी बेटी निन्दा है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वही व्यक्ति बुरे किस्म का निदंक भी होता है। दूसरों की निंदा करने का कारण यह भी है कि वह सब लोगों की आँखों से गिर जाये और उस खाली हुए स्थान पर उस निन्दक को सम्मान सही बैठा दिया जाये। इसी कारण निन्दा को ईर्ष्या की बड़ी बेटी कहा गया है।

प्रश्न 9. लेखक ने ईर्ष्या को अनोखा बरदान क्यों कहा है?

उत्तर- ईर्ष्या को अनोखा वरदान लेखक ने इसलिए कहा है क्योंकि जिसके हृदय में ईर्ष्या का वास हो जाता है, वह उन सब चीजों से भी आनंद नहीं उठा पाता जोकि उसके स्वयं के पास होती है बल्कि उन वस्तुओं से दुःख उठाता रहता है जो दूसरों के पास है। परमात्मा के द्वारा प्रदत्त वैभव से वह खुश नहीं रहता बल्कि दूसरों के वैभव को देखकर वह सदा जलता

रहता है। उसकी चिंता उसके लिए चिता के समान हो जाती है और वह तिल-तिल कर घुटता रहता है।

➡ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. लेखक के मतानुसार ईर्ष्या का लाभदायक पक्ष क्या हो सकता है?

उत्तर - लेखक के मतानुसार ईर्ष्या का एक पक्ष लाभदायक हो सकता है कि जिसके अधीन हर आदमी, हर जाति तथा हर समूह अपने आप अपने प्रतिद्वंदी के समकक्ष बनाना चाहता है। ईर्ष्या से ही मनुष्य में प्रतिद्वंदिता का जन्म होता है और वही प्रतिद्वंदिता मनुष्य के विकास में सहायक होती है, अर्थात् उसके सहारे मनुष्य अपने को आगे बढ़ाने में सहायक होता है। वही प्रतिद्वंदिता का गुण मनुष्य को महान बनाता है, अर्थात् उसके अन्दर (मन में) अच्छे गुणों को उत्पन्न करता है।

प्रश्न 2. ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है?

उत्तर- ईर्ष्यालु लोगों से बचने का श्रेष्ठ उपाय मानसिक अनुशासन है क्योंकि जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का होता है, उसे फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत छोड़ देनी चाहिए। साथ ही उसे यह भी पता लगा लेना चाहिए कि जिस अभाव के कारण वह ईर्ष्यालु बन गया है, उसकी पूर्ति का रचनात्मक तरीका क्या है और जिस दिन उसके भीतर यह जिज्ञासा जागेगी उसी दिन से वह ईर्ष्या करना कम कर देगा।

प्रश्न 3. अर्थ स्पष्ट करें-

उत्तर- जो लोग नये मूल्यों का निर्माण करने वाले हैं, वे बाजारों में नहीं बसते हैं। वे शोहरत के पास भी नहीं रहते। यहाँ लेखक ने नीत्से के कथन को सार्थक किया है। नीत्से कहता है जो लोग नए मूल्यों का निर्माण करते हैं वे सबसे दूर रहते हैं। भीड़-भाड़ से दूर एकान्तवास करते हैं। उन्हें शोहरत की इच्छा नहीं होती। वे केवल अपना ध्यान अपने कार्य पर ही केन्द्रित रखते हैं। किसी की निंदा या किसी की बकवास पर वे ध्यान ही नहीं देते। वे तो भीड़ से दूर रहकर ही अपने सब काम को अंजाम देते हैं।

प्रश्न 4. चिंता चिता समान होती है।

उत्तर- चिंता से मनुष्य का मन कुंठित हो जाता है, अर्थात् मनुष्य अपने आप को कुछ कर पाने में

समर्थ नहीं पाता है। उसका शरीर क्षीण होने लगता है और मन के कुंठित होने से उसका शरीर अस्वस्थ हो जाता है। मनुष्य का जीवन दूभर हो जाता है। अतः इसी कारण से चिंता चिता के समान हो जाती है।

11. कबीर के पद

➡ लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कबीरदास ने लोगों को क्या उपदेश दिया है?

उत्तर- कबीरदास ने लोगों को उपदेश दिया है कि ब्रह्म का निवास स्थान आत्मा होता है, उन्हें मंदिर, मस्जिद, व काबा में ढूँढ़ना बेकार है।

प्रश्न 2. कबीरदास किस काल के कवि माने जाते हैं?

उत्तर- कबीरदास भक्तिकाल के कवि माने जाते हैं?

प्रश्न 3. 'मोको' शब्द कबीर ने किसके लिए प्रयोग किया है।

उत्तर- 'मोको' शब्द कबीर ने ब्रह्म के लिए प्रयोग किया है।

प्रश्न 4. कबीर के मतानुसार 'मोको कहाँ ढूँढे' का अर्थ क्या है?

उत्तर- कबीर के मतानुसार 'मोको कहाँ ढूँढे' का अर्थ है कि लोग भगवान को मन्दिर मस्जिद व काबा में ढूँढते फिरते हैं जबकि भगवान तो हमारी आत्मा में निवास करते हैं।

प्रश्न 5. पहले पद में कबीर ने किस-किसके मन के बारे में कहा है?

उत्तर- पहले पद में कबीर ने अपने व ईश्वर के मन के बारे में कहा है?

प्रश्न 6. कबीर के अनुसार निर्गुण भक्तिधारा का तात्पर्य क्या है?

उत्तर- कबीर के अनुसार निर्गुण भक्तिधारा का तात्पर्य यह है। जिसमें ईश्वर के निराकार स्वरूप की आराधना की जाती है।

प्रश्न 7. सगुण भक्तिधारा का क्या तात्पर्य है?

उत्तर- जिसमें ईश्वर के साकार रूप की आराधना की जाती है।

12. विक्रमशिला

➡ लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. विक्रमशिला कहाँ स्थित है?

उत्तर- विक्रमशिला आधुनिक भागलपुर जिला, कहलगाँव के अंतीचक गाँव में अवस्थित है।

प्रश्न 2. विक्रमशिला का निर्माण कब और किसने किया?

उत्तर- इसका निर्माण आठवीं शताब्दी में पालवंश के प्रतापी राजा धर्मपाल ने किया।

प्रश्न 3. आर्यभट्ट किस विद्या के क्षेत्र में विश्व विख्यात हैं?

उत्तर- आर्यभट्ट खगोल विद्या के क्षेत्र में विश्व विख्यात हैं।

प्रश्न 4. तिब्बत में बौद्धधर्म का प्रचार-प्रसार किसने किया था?

उत्तर- तिब्बत में बौद्धधर्म का प्रचार-प्रसार अतिश दीपंकर ने किया।

प्रश्न 5. विक्रमशिला से उत्तीर्ण विश्वविख्यात विद्वान कौन थे?

उत्तर- विक्रमशिला से उत्तीर्ण विद्वानों में आर्यभट्ट और अतिश दीपंकर प्रमुख थे।

प्रश्न 6. विक्रमशिला की प्रसिद्धि किन सदियों तक फैल चुकी थी?

उत्तर- विक्रमशिला की प्रसिद्धि दसवीं- ग्यारहवीं सदी तक फैल चुकी थी।

प्रश्न 7. विक्रमशिला के नामकरण के संदर्भ में प्रचलित जनश्रुति क्या है?

उत्तर- विक्रमशिला के नामकरण के संदर्भ में ऐसी जनश्रुति है कि विक्रम नामक यक्ष को दमित करके इस स्थान पर विहार बनाने के कारण इसका नाम विक्रमशिला हुआ।

प्रश्न 8. विक्रमशिला पाठ्यक्रम में क्या-क्या शामिल था?

उत्तर- विक्रमशिला पाठ्यक्रम में तंत्र विद्या, व्याकरण, न्याय, सृष्टि-विज्ञान, शब्द विद्या, शिल्प विद्या, साँख्य विद्या, वैशेषिक, अध्यात्म विद्या, विज्ञान, जादू एवं चमत्कार शामिल था।

➡ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. विक्रमशिला की क्या विशेषता थी?

उत्तर- विक्रमशिला एक विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था। यहाँ छह महाविद्यालय थे जहाँ अलग-

अलग 'द्वार पण्डित' नियुक्त किए गए थे। यहाँ एक समृद्ध पुस्तकालय था। यहाँ विद्या सहित प्रारंभिक दर्शन और बौद्ध दर्शन से संबंधित ग्रंथों का विशाल संग्रह मौजूद था। यहाँ की पाण्डुलिपियों को तैयार करने के लिए आचार्य और शोधार्थी दोनों ही अधिकृत थे। अध्यापन का माध्यम संस्कृत भाषा थी। राजा गोपाल द्वितीय के शासन के पन्द्रहवें वर्ष में प्रसिद्ध ग्रंथ 'अष्टशाहस्रिका-प्रज्ञापारमिता' की पाण्डुलिपि तैयार की गयी थी। यह ग्रंथ आज भी ब्रिटिश म्युजियम, लन्दन की धरोहरों में शामिल है।

13. दीदी की डायरी

➟ लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. संजू कौन थी?

उत्तर- संजू कक्षा आठ में पढ़ने वाली गुलाब के फूल के समान नन्हीं सी गुड़िया थी।

प्रश्न 2. संजू को डायरी लिखने की प्रेरणा किससे मिली?

उत्तर- संजू को डायरी लिखने की प्रेरणा बापू के 'सत्य के प्रयोग' जो उसे बहुत पसंद आए थे से मिली।

प्रश्न 3. 'सत्य के प्रयोग' पुस्तक के रचयिता कौन हैं?

उत्तर- 'सत्य के प्रयोग' पुस्तक के रचयिता महात्मा गाँधी हैं।

प्रश्न 4. संजू कैसी लड़की थी? और उसे किस चीज का शौक था?

उत्तर- संजू एक हँसमुख लड़की थी और उसे किताबें पढ़ने का शौक था।

प्रश्न 5. नीलू अब विद्यालय क्यों नहीं आयेगी?

उत्तर- घरवाले नीलू की शादी कराने जा रहे हैं, फलतः अब वह इस विद्यालय में नहीं आयेगी।

प्रश्न 6. 'व्यक्ति को प्रत्येक दिन डायरी लिखनी चाहिए।' इस कथन से आप सहमत हैं या असहमत है। तर्क दीजिए।

उत्तर- प्रत्येक व्यक्ति को रोजाना अपनी डायरी लिखनी चाहिए। हमें अपने रोज किये जाने वाले कार्यों को लिपिबद्ध करके अपनी डायरी में लिखना चाहिए। अपने जीवन की प्रत्येक

घटना का सम्पूर्ण वर्णन लिखना चाहिए। ऐसा करने पर हमें अपनी गलतियों को सुधारने का मौका मिलेगा।

प्रश्न 7. संजू को डायरी लिखने में मदद किसने की?

उत्तर- संजू को डायरी लिखने में उसकी दीदी ने मदद की। उसकी दीदी ने कहा कि रात को मन लगाकर बैठ जाओ और पूरे दिन की घटनाओं को याद करके उस डायरी में लिख डालो। संजू ने अपनी दीदी के कहने पर ऐसा ही किया।

➞ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 8. 'दीदी की डायरी' गद्यांश का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-

सारांश

गुलाब के फूल के समान नन्हीं सी संजू। वह छोटी है पर सयानी है कक्षा आठ में पढ़ती है। वह स्वभाव से हंसमुख है। उसे कविता कहानी व कॉमिक्स आदि से लगाव है। उसे उसके जन्मदिन व अपनी कक्षा में अच्छे नम्बर लाने के कारण उपहार में पुस्तकें मिलती हैं। इस कारण उसका घर एक छोटा सा पुस्तकालय बन गया है।

अभी पिछले दिनों में संजू ने गाँधी साहित्य पढ़ा। बापू के 'सत्य के प्रयोग' उसे बहुत पसन्द आये तथा बापू के इन प्रयोगों को संजू ने अपनी डायरी में लिखा था। उसी के पश्चात् संजू ने भी डायरी लिखने के बारे में सोचा। जिसमें संजू की माँ ने उसका हौसला बढ़ाया और उसके पिताजी ने उसे एक सुन्दर डायरी लाकर दी। अब संजू ने सोचा की वह इसे शुरू कैसे करें तभी उसे दीदी की याद आयी। उसने दीदी को अपनी इच्छा बताई तब उसकी दीदी ने कहा की बस रात को मन लगाकर बैठ जाओ और डायरी में दिनभर की घटना लिख डालो। किन्तु संजू तो दीदी से उनकी अपनी डायरी को दिखाने की जिद करने लगी और अन्त में वह सफल भी हो गई। अर्थात् दीदी ने उसे अपनी डायरी दिखा दी। उसी डायरी के कुछ अंश ये हैं- 2 जनवरी, 97 आज मैं शीला के घर गई तो वह स्नानघर में थी। अकेले बैठे-बैठे क्या करती एक पुरानी पत्रिका का रंगीन पृष्ठ नजर आया। बैठे-बैठे उसी को पलटने लगी। उसमें एक चुटकुला बड़ा मजेदार था। जिसे पढ़कर वह हँसते-हँसते लोट-पोट हो गई। यहाँ तक की अभी डायरी लिखते समय भी हँसी रुक नहीं रही है।

7 जनवरी 97 दीदी घर से स्कूल जाने के लिए निकली तो तपाक से किसी ने छाँक दिया। छींक के कारण दादी माँ ने तो स्कूल जाने से ही मना कर दिया। मुझे किन्तु तो अपनी कक्षा में अभिनय करना था अतः यही सोचकर मैं आगे बढ़ी जो होगा सो देखा जायेगा।

14. पीपल

➡ लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'पीपल' कविता के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर- 'पीपल' कविता के रचनाकार गोपाल सिंह नेपाली हैं।

प्रश्न 2. पीपल का पेड़ हमारे लिए किस प्रकार उपयोगी है?

उत्तर- पीपल का पेड़ हमारे लिए बहुत उपयोगी है। यह पथिकों (राहगीरों) को छाया प्रदान करता है। लोग थक हारकर इसके नीचे सो जाते हैं। शीतल हवा बहने से खूब अच्छी नींद आती है। यहाँ पक्षियों का निवास स्थान होता है। पक्षियों के सुन्दर मधुर स्वर आने वाले राहगीरों की थकावट को दूर करते हैं।

प्रश्न 3. कैसा वातावरण मिलने पर बुलबुल गाने लगती है?

उत्तर- ठंडी बयार चलने पर नदियों के कल-कल बहने पर, पत्तों के हिलने पर इस प्रकार का सुन्दर वातावरण मिलने पर बुलबुल गाने लगती है।

प्रश्न 4. वन्य प्रान्त के सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तर - वन्य प्रान्त में अनेक प्रकार के वृक्ष पाये जाते हैं, जैसे-पीपल, जामुन, तमाल, इमली आदि के वृक्ष फैले हुए हैं। झरने बहते हैं, कमल का डंठल जल से ऊपर आता है। भंवरें फूल पर मंडराते रहते हैं। पक्षी चहचहाते हैं। चकोर रातभर अपने प्रियतम चकवे की चाह में रोती रहती है। मोर नाचते रहते हैं। जिसकी छवि बड़ी अनोखी होती है। वन्य प्रान्त की शोभा न्यारी (अनोखी) है।

➡ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. प्रस्तुत कविता का सन्दर्भ सहित भावार्थ लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'पीपल' अध्याय से लिया गया है। इसके

रचयिता 'गोपाल सिंह नेपाली' है।

भावार्थ-कवि का कहना है कि वन का यह पीपल का पेड़ जो युगों-युगों से अचल और अटल है। जिसके ऊपर खुला नीले रंग का आकाश और नीचे पृथ्वी पर नदी, झील आदि बह रहे हैं। जामुन, तमाल, इमली तथा करील काँटों वाले वृक्ष भी हैं। जल से बाहर कोमल कमल की डंठलें बाहर निकल गयी है, जिसकी फुनगी पर लाल-लाल कमल के फूल खिले हैं। हंस भी जल में तैरते हुए मानो क्रीड़ा कर रहे हैं। ऊँचे पर्वतों से झरते हुए झरने झर-झर करके पृथ्वी पर गिर रहे हैं।

उसी झरने के पास खड़ा-खड़ा पीपल सबकी कल-कल तथा छल-छल को सुनता रहता है। पत्ते भी ढल-ढल कर हिलते रहते हैं और पीपल के पत्ते जो गोल-गोल मानो बो इधर-उधर घूमते हुए कुछ कह रहे हों। जब-जब कोई पक्षी वृक्ष पर उड़कर आता है तब-तब वह वहाँ आकर चुन-चुनकर फल खाता है और जब वर्षा की फुहारें आती हैं तब मानों पक्षियों के मन के सितार बजने लगते हैं। ठंडी हवा चलने लगती है। तब-तब वृक्ष के कोमल पत्ते हिल-डुलकर सर्सर व मर्मर करते हुए सुन्दर मनोहर रूप को देख-देखकर तथा सुन-सुनकर मानो बुलबुल भी बैचेन हो जाती है।

बुलबुल चह-चह करके गाती रहती है और नदी मानो बह-बह कर गाती रहती है। पेड़ों के पत्ते रह-रहकर हिलते रहते हैं। पीपल के वृक्ष में जितने भी कोटर है वह सभी पक्षियों और गिलहरियों के घर हैं।

शाम के समय जब सूरज ढलता हैं अर्थात् अस्ताचल को जाता है मानो सूर्य अस्ताचल को जाते समय अपनी उज्ज्वल किरणों को समेटकर ले जाता है।

और सारा संसार सुनसान होता है क्योंकि चील, कौआ, भी इस अंधियारी संध्या को देखकर मानो अपने घर को चले जाते हैं और इसके पश्चात् वृक्षों की कोटरें भर जाती हैं, और पत्ते के द्वारा बनाये गये घर अर्थात् घोंसले भर जाते हैं। मानों प्रत्येक घर में नींद उतरकर आ जाती है।

नींद में ही सवेरा हो जाता है, और इस प्रकार सबकी रात्रि कट जाती है। इसके पश्चात् फिर सब वही बात ही बात। इस पृथ्वी का यह वन का देश, जो सबसे दूर, अलग एकान्त तथा शान्त (सुनसान) है। जहाँ पर शाल और बाँस खड़े हैं। पशु नरम नरम घास चरते हैं। झरनों और नदियों के आस-पास चकोर अपने प्रियतम के मिलन की आस में रो-रोकर ही सुबह कर देते हैं। मोर यहाँ नृत्य करते हैं उस वन प्रान्त की सुन्दरता (शोभा) निराली है।

15. दीनबन्धु 'निराला'

➟ लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. निराला कौन थे?

उत्तर- दीनबन्धु निराला एक छायावादी कवि थे।

प्रश्न 2. विराट आयोजनों में निराला क्या काम करते थे?

उत्तर- विराट आयोजनों में निराला केवल दरिद्रनारायण को भोज्य पदार्थ वितरित करते थे।

प्रश्न 3. दीनबन्धु निराला के लेखक कौन हैं?

उत्तर- दीनबन्धु निराला के लेखक 'आचार्य शिवपूजन सहाय' हैं।

प्रश्न 4. निराला अपने मित्रों के लिए क्या थे?

उत्तर- निराला अपने मित्रों के लिए मुक्तहस्त दोस्त-परस्त थे।

प्रश्न 5. निराला जी पर रहीमदास की कौन-सी उक्ति सही बैठती है?

उत्तर- निराला जी पर रहीमदास की यह उक्ति 'जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय' सही बैठती है।

प्रश्न 6. निराला किसके बारे में अधिक सोचते थे?

उत्तर- निराला हमेशा अभाव ग्रस्तों के बारे में ही सोचते थे।

प्रश्न 7. निराला जी से संबंधित बातें लोगों को अतिरंजित क्यों जान पड़ती हैं?

उत्तर- निराला जी से संबंधित बातें लोगों को अतिरंजित इस कारण जान पड़ती हैं क्योंकि विरला ही कोई होगा जो अपनी आवश्यकताओं को भुलाकर दूसरों की आवश्यकताओं को दूर करने के लिए परेशानियाँ और कठिनाइयों का सामना करे। खुद-भूखे रहकर दूसरे को खाना दे वस्तुतः निराला एक महामानव थे। वे चीनबन्धु से लोग उनकी सहृदयता का माने न माने परन्तु वे सद्गुणों से परिपूर्ण थे। इस प्रकार विरले ही कोई उनकी समानता कर सकता है।

प्रश्न 8. निराला को 'दीनबन्धु' क्यों कहा जाता है?

उत्तर- निराला सही अर्थों में 'दीनबन्धु' थे। अपनी शक्ति के अनुसार वे जीवन-भर दीन-दुखियों की सहायता करते रहे, जहाँ सेवा-सहायता में वह समर्थ न हो सके, वही वह हार्दिक सहानुभूति का ही उपयोग करके सन्तोष पाते थे। यही कारण है कि निराला जी को दीनबन्धु कहा गया है।

16. खेमा

➡ **लघु उत्तरीय प्रश्न**

प्रश्न 1. खेमा कहानी किस विषय पर आधारित है?

उत्तर- खेमा कहानी 'बाल श्रमिक नृशंसता' विषय पर आधारित है।

प्रश्न 2. खेमा कौन है?

उत्तर- खेमा 'मुक्ताकाशी' होटल में काम करने वाला एक बालश्रमिक है।

प्रश्न 3. 'मुक्ताकाशी' होटल का मालिक कौन है?

उत्तर- कसारा 'मुक्ताकाशी' होटल का मालिक है।

प्रश्न 4. खेमा का रंग रूप कैसा है?

उत्तर- खेमा का गेहुँआ रंग है। वह आठ नौ वर्ष का है। उसका कद साढ़े तीन फुट का है। उसके दूध के दाँत भी अभी नहीं टूटे हैं।

प्रश्न 5. 'मुक्ताकाशी' होटल का मालिक कसारा कैसा था?

उत्तर- 'मुक्ताकाशी' होटल का मालिक कसारा संवेदनहीन था। प्रश्न

6. कसारा के होटल पर खेमा क्यों काम करता था?

उत्तर- खेमा अपनी जीविकोपार्जन के लिए कसारा के होटल पर काम करता था क्योंकि उसे कसारा के हाथ बेच दिया गया था।

प्रश्न 7. खेमा ने जब कसारा से अपने लिए चप्पल की मांग की तो कसारा ने उसे क्या जवाब दिया?

उत्तर- कसारा से खेमा के द्वारा चप्पल की माँग करने पर कसारा ने कहा- "अभी रख दूँगा। चप्पलें सिर पर, चल आ अपना काम कर बड़ा आया चप्पलें पहनने वाला।"

प्रश्न 8. खेमा के पिता ने किन परिस्थितियों के कारण खेमा को बेच दिया था?

उत्तर- खेमा के पिता आर्थिक तंगी से जूझ रहे थे। वह बच्चों का भरण-पोषण नहीं कर पा रहे थे। अतः खेमा के पिता ने बच्चों के भरण-पोषण के दायित्व से मुक्त होने के लिए उसे (खेमा को) बेच दिया था।

प्रश्न 9. खेमा को अपने पैरों पर पानी गिराने से क्यों तसल्ली मिलती थी?

उत्तर- खेमा नंगे पैर रहता था। अतः गर्मी के कारण उसके नंगे पैर जलते थे जलते हुए पैरों पर पानी डालने से खेमा को क्षण भर की तसल्ली मिलती थी।

➡ **दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

प्रश्न 1. लेखक ने जब खेमा के पिता से कहा कि वे खेमा को अपने साथ ले जाकर पढ़ाना चाहते हैं तब खेमा के पिता की आँखें क्यों भर आई? अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर- लेखक को जब पता चला की खेमा को खेमा के पिता ने पैसों की तंगी या उसका भरण-पोषण न कर पाने के कारण कसारा के होटल पर बेच दिया तो लेखक को बहुत दुख हुआ। तब लेखक छानबीन करके खेमा के गाँव पहुँचा। लेखक ने खेमा के पिता से कहा कि मैं एक अध्यापक हूँ और खेमा को जानता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मैं। खेमा को पढ़ाऊँ उसे अच्छा इंसान बनाऊँ इसलिए मैं खेमा को लेने आया हूँ। यह सुनकर खेमा के पिता की आँखें भर आई। खेमा के पिता के मन में निश्चय ही बच्चे के प्रति अनुराग उमड़ पड़ा था।

प्रश्न 2. कसारा का होटल छोड़ने के बाद खेमा के जीवन में किस प्रकार का परिवर्तन आया?

उत्तर- कसारा का होटल छोड़कर जब खेमा लेखक के साथ चलने लगा तो खेमा की चाल बदल गई। उसी प्रकार जैसे पिंजरे से पंछी मुक्त हुआ हो। घर आकर लेखक ने उसे स्नान करने को

कहा। फिर दोनों ने खाना खाया। रात को जब लेखक सोने लगे तो खेमा उनके पास आकर उनके पैर दबाने लगा। लेखक उठ बैठा और पूछा की मेरे पैर क्यों दबा रहा है, तो पता चला खेमा रोज रात को दो घण्टे कसारा के पैर दबाता था। तब लेखक की आँखें भर आयी।

प्रश्न 3. खेमा कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- सारांश

गली के नुक्कड़ पर बिना नाम का एक चालू और अस्थाई होटल था। जिसका मालिक कसारा नाम का व्यक्ति था। अपने काम के बोझ को हल्का करने के लिए कसारा ने एक आठ नौ वर्ष के लड़के को अपने यहाँ काम पर रखा, उसका नाम खेमा था। सुबह को ग्राहकी के समय कसारा चाय बनाता और खेमा चाय का गिलास ग्राहकों को दे आता। एक दिन खेमा ने कसारा से कहा कि गर्मी में पैर जलते हैं, मुझे चप्पल लाकर दे दो काका। कसारा ने खेमा से कहा, "अभी रख दूँगा चप्पलें सिर पर, चल अपना काम कर, बड़ा आया चप्पल पहनने बाला। उसकी बात सुनकर खेमा निराश हो गया। खेमा अपने काम पर लगा रहता फिर भी हमेशा मालिक उसके साथ दुर्व्यवहार करता। खेमा के इस कार्य को लेखक दो दिनों से देख रहा था। जानकारी करने पर पता चला कि खेमा के माता-पिता ने अपने बच्चों के भरण-पोषण के दायित्व से मुक्त होने के लिए खेमा को कसारा के हाथ बेच दिया है।

लेखक ने खेमा से पूछा की सेठजी तुझे कितना पैसा देते हैं तो खेमा ने कहा मुझे नहीं पता। फिर लेखक ने कहा की क्या तुम यहाँ खुश हो किन्तु उसने कोई जवाब नहीं दिया और चुप रहा। क्या तुम स्कूल नहीं जाते हो? उसने कहा मेरी तो पढ़ने की इच्छा है किन्तु मेरे बापू स्कूल नहीं भेजते। मेरे साथ चलोगे तो खेमा ने पूछा की मुझे क्या करना होगा? लेखक ने कहा-"स्कूल जाना, पढ़ाई करना मेरे साथ रहना।" खेमा के चेहरे पर यह सुनकर प्रसन्नता झलक गई।

लेखक खेमा के पिता से मिलने के लिए खेमा के गाँव गया। लेखक ने खेमा के पिता से कहा की वह खेमा को अपने साथ ले जाकर पढ़ाना चाहता है। यह सुनकर खेमा के पिता की आँखें भर आई। खेमा के पिता ने कहा किन्तु उसे पहले कसारा के पैसे लौटाने पड़ेंगे। लेखक

आश्वस्त किया कि वह उसकी व्यवस्था कर देगा। खेमा लेखक के प्रयास से बंधुआ मजदूरी से मुक्त हो गया और खेमा लेखक के साथ चल पड़ा। रात को सोने के वक्त वह लेखक के पाँव दबाने लगा। लेखक की आँखे भर आई। लेखक ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा, वह सो गया। करीब दो घंटे बाद वह लगातार बड़बड़ाने लगा "आया सेठजी"।

17. खूशबू रचते हैं हाथ

➡ **लघु उत्तरीय प्रश्न**

प्रश्न 1. 'खुशबू रचते हैं हाथ' रचना किसकी है?

उत्तर- 'खुशबू रचते हैं हाथ' रचना अरुण कमल की है।

प्रश्न 2. 'खुशबू रचते हैं हाथ' से तात्पर्य क्या है?

उत्तर- खुशबू रचते हैं हाथ से आशय है कि वंचित लोग अपनी मेहनत से सुगंधित अगरबत्तियों का निर्माण कर रहे हैं।

प्रश्न 3. 'खुशबू रचते हैं हाथ' किन परिस्थितियों में रह रहे हैं?

उत्तर- खुशबू रचते हाथ गंदी नालियों और गंदगी के ढेर के बीच में रह रहे हैं।

प्रश्न 4. गंदे मुहल्ले में रहने वाले लोग काम क्या करते हैं?

उत्तर- 'गंदे मुहल्ले में रहने वाले लोग केवड़ा, गुलाब, खस और रातरानी अगरबत्तियाँ बनाते

प्रश्न 5. 'उभरी नसों वाली हाथ' का क्या अर्थ है?

उत्तर- अगरबत्ती के निर्माण में लगातार हाथ से काम करने के कारण हाथ की नशे उभर आई है जो मेहनत करने की निशानी है।

प्रश्न 6. पीपल के पत्ते से नए-नए हाथ का क्या अर्थ है?

उत्तर- बच्चों के हाथ की कोमलता की तुलना पीपल के पत्ते से की गयी है। पीपल का पत्ता जिस तरह कोमल और रमणीय होता है। उसी प्रकार उन बच्चों के

18. हौसले की उड़ान

➡ लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. गुड़िया कहाँ की रहने वाली है?

उत्तर- गुड़िया नोखा प्रखंड रोहताश की रहने वाली है।

प्रश्न 2. विष्णु शंकर तिवारी की खुशी का क्या कारण था?

उत्तर- विष्णु शंकर तिवारी की बेटी सोनी ने कैमूर जिले में एथलेटिक्स प्रतियोगिता में400 मीटर और 1600 मीटर की दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। फलत: वे खुसी से फूले नहीं समा रहा था।

प्रश्न 3. जैनब कौन है?

उत्तर- जैनब मथुरापुर कहतरवा पंचायत शिवहर के मोहम्मद अब्दुल रहमान खान को पोली है जो बी०ए० में बढ़ रही है और कराटे की शिक्षा भी देती है।

प्रश्न 4. 'हौसलें की उड़ान' शीर्षक के द्वारा किस पर प्रकाश डाला है?

उत्तर- 'हौसले की उड़ान बिहार की बेटियों की असाधारण विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है।

प्रश्न 5. 'सोनी' किस ताकत के खिलाफ़ खड़े होने का हौसला रखती है?

उत्तर- 'सोनी' अध्ययन विरोधी ताकतों के खिलाफ तनकर खड़े होने का हौसला रखती है।

प्रश्न 6. गुड़िया पर पढ़ाई का जुनून कैसे चढ़ा?

उत्तर- गुड़िया के माता-पिता उसकी पढ़ाई के लिए राजी नहीं थे। एक दिन गुड़िया ने कुछ कर गुजरने का हौसला महसूस किया। मो० असीन इदरीसी को माँ समेत उसने घर में बंद किया और तेरह किलोमीटर पैदल चलकर नोखा के उत्प्रेरण केन्द्र पहुँच गयी। वहाँ पहुँच उसने अपना नामांकन कराया। पिता को समाज की बंदिशों की चिंता थी, पर गुड़िया के आगे उनकी एक न चली। और उत्प्रेरण केन्द्र के बन्द होने पर गाँव में ही उसने पढ़ाई जारी रखी है।

प्रश्न 7. अब्दुल रहमान खान को अपनी पोती जैनब खानम पर क्यों गर्व है?

उत्तर- मथुरापुर कहतरवा पंचायत शिवहर के 94 वर्षीय मोहम्मद अब्दुल रहमान खान को अपनी पोती जैनब खानम पर गर्व है वे जैनब की उम्रदराजी के लिए अल्लाह से दुआ माँगते हैं। जैनब की पढ़ाई महज तीन दर्जे के बाद ही छुड़ा दी गयी। वजह पर्दा प्रथा की जकड़ बंदी थी लेकिन गाँव में जगजगी केन्द्र खुलने से जैनब की ललक परवान चढ़ी। अब वह बी०ए० में पढ़ रही है। और साथ ही लड़कियों को महिला शिक्षण केन्द्र में शिक्षित भी कर रही है।

19. जननायक कर्पूरी ठाकुर

➡ **लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर**

प्रश्न 1. कर्पूरी ठाकुर का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर- कर्पूरी ठाकुर का जन्म समस्तीपुर के निकट पितौझिया नामक गाँव में 24 जनवरी, 1921 को हुआ।

प्रश्न 2. उत्तर- कर्पूरी ठाकुर के माता-पिता का क्या नाम था ?

उत्तर- कर्पूरी ठाकुर की माता का नाम रामदुलारी देवी व पिता का नाम गोकुल ठाकुर था।

प्रश्न 3. कर्पूरी ठाकुर को क्या-क्या कार्य करने में आनन्द मिलता था?

उत्तर- कर्पूरी ठाकुर को गीत गाने और गाँव की मंडली में डफ बजाने में आनन्द मिलता था।

प्रश्न 4. कर्पूरी ठाकुर ने आई०ए० की परीक्षा कब पास की?

उत्तर- कर्पूरी ठाकुर ने 1942 में आई०ए० की परीक्षा पास की।

प्रश्न 5. कर्पूरी ठाकुर बिहार के उपमुख्यमंत्री कब बने थे?

उत्तर- कर्पूरी ठाकुर सन् 1967 ई० में बिहार के उपमुख्यमंत्री बने थे।

प्रश्न 6. कर्पूरी ठाकुर बचपन में कैसे थे?

उत्तर- कर्पूरी ठाकुर बचपन से ही नेतृत्व की क्षमता रखते थे।

प्रश्न 7. कर्पूरी ठाकुर कितनी बार बिहार के मुख्यमंत्री पद पर रहे?

उत्तर- कर्पूरी ठाकुर दो बार बिहार राज्य के मुख्यमंत्री पद पर रहे।

प्रश्न 8. बचपन में कर्पूरी ठाकुर को क्या शौक था?

उत्तर- कर्पूरी जी को बचपन में दौड़ने और तैरने का शौक था?

प्रश्न 9. कर्पूरी ठाकुर को मैट्रिक के बाद उच्च शिक्षा के लिए कहाँ और किस प्रकार जाना पड़ा?

उत्तर- मैट्रिक के बाद उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने दरभंगा के चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज में आई०ए० में नामांकन करवाया। वे घर से पैदल मुक्तापुर रेलवे स्टेशन जाते और फिर गाड़ी पकड़कर दरभंगा जाते।

प्रश्न 10. सचिवालय में स्थित कार्यालय में पहले दिन उन्होंने कैसा दृश्य देखा, तथा उस पर उन्होंने फिर क्या निर्णय लिया?

उत्तर- सचिवालय स्थित कार्यालय में पहले दिन जब वे लिफ्ट से ऊपर गये तो लिफ्ट के ऊपर अंग्रेजी में लिखे वाक्य को पढ़ते ही वह चौंक गये-"Only For Officers." शेष कर्मचारियों का आना-जाना सीढ़ियों से होता था। किन्तु कर्पूरी ठाकुर को इसमें सामंती प्रथा की बू आई। और उन्होंने लिफ्ट का प्रयोग सार्वजनिक कर दिया।

➡ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर छाँटकर लिखिए।

मुल्क का भी मुझ प पर दावा कुछ कम नहीं है। अभी भारत माता परतंत्रता की पीड़ा से कराह रही है और मैं विद्याभ्यास के लिए अपनी पढ़ाई जारी रखूँ। यह मुमकीन नहीं है सर। जब तक देश के प्रत्येक निवासी को सम्मानजनक और सुविधा-संपन्न स्वाधीन जीवन-यापन करने का अवसर नहीं मिलेगा, तब तक मेरे परिजनों को भी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

प्रश्न 2. निम्नलिखित गद्यांश के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर छाँटकर लिखिए।

ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व के धनी श्री कर्पूरी ठाकुर का जन्म समस्तीपुर के निकट पितौझिया नामक गाँव में 24 जनवरी, 1921 को हुआ। उनकी माता का नाम रामदुलारी देवी और पिता का नाम गोकुल ठाकुर तथा पत्नी का नाम फुलेसरी देवी था।

20. झाँसी की रानी

➡ लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'झाँसी की रानी' कविता किस कवयित्री की रचना है?

उत्तर- 'झाँसी की रानी' कविता की कवयित्री 'सुभद्रा कुमारी चौहान' है।

प्रश्न 2. लक्ष्मीबाई को मर्दानी क्यों कहा जाता है?

उत्तर- लक्ष्मीबाई वीर मर्दों के बीच में उन्हीं के समान युद्ध करती थी।

प्रश्न 3. रानी लक्ष्मीबाई किस आयु में वीरगति को प्राप्त हुई थी?

उत्तर- रानी लक्ष्मीबाई की आयु उस समय कुल तेइस वर्ष थी, जब वह वीरगति को प्राप्त हुई थी।

प्रश्न 4. रानी लक्ष्मीबाई की कुलदेवी कहाँ थी?

उत्तर- रानी लक्ष्मीबाई की कुलदेवी महाराष्ट्र में थी।

प्रश्न 5. रानी लक्ष्मीबाई किसकी मुँहबोली बहन थी?

उत्तर- रानी लक्ष्मीबाई कानपुर के नाना की मुँहबोली बहन थी।

प्रश्न 6. लक्ष्मीबाई के पिता की कितनी संतान थी?

उत्तर- लक्ष्मीबाई अपने पिता की अकेली संतान थी।

प्रश्न 7. बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी लक्ष्मीबाई के लिए क्या थी?

उत्तर- बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी लक्ष्मीबाई के लिए सहेली के समान थी।

प्रश्न 8. 'वीरता' और 'वैभव' की सगाई होने से कवयित्री का तात्पर्य क्या है?

उत्तर- 'वीरता' से तात्पर्य लक्ष्मीबाई से और 'वैभव' का तात्पर्य गंगाधर राव है।

प्रश्न 9. लक्ष्मीबाई का बचपन किस प्रकार के खेलों को खेलने में बीता था?

उत्तर- लक्ष्मीबाई का बचपन पढ़ने, अस्त्र-शस्त्र जैसे-बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी आदि की शिक्षा और खेलने में बीता था।

21. चिकित्सा का चक्कर

➡ लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'चिकित्सा का चक्कर' में किस पद्धति का वर्णन किया गया है?

उत्तर- 'चिकित्सा का चक्कर' में चिकित्सा पद्धतियों का वर्णन किया गया है।

प्रश्न 2. 'चिकित्सा का चक्कर' साहित्य की कौन-सी विधा कहलाती है?

उत्तर- 'चिकित्सा का चक्कर' साहित्य की हास्य-व्यंग्य विधा कहलाती है।

प्रश्न 3. 'चिकित्सा का चक्कर' के रचयिता कौन है?

उत्तर- 'चिकित्सा का चक्कर' के रचयिता बेढब बनारसी है।

प्रश्न 4. लेखक को वैध जी ने कौन-से श्लोक सुनाये?

उत्तर- लेखक को वैध जी ने 'चरक' 'सुश्रुत' के श्लोक सुनाये।

प्रश्न 5. डॉक्टर महोदय ने एहतियात न बरतने पर लेखक को क्या कहा?

उत्तर- यदि आप एहतियात न करेंगे तो आपको 'अपेंडिसाइटीज' हो जाएगा।

प्रश्न 6. लेखक के बीमार होने पर दिन में दो बार क्या होता है?

उत्तर- लेखक के बीमार होने पर दिन में दो बार बुलेटिन निकलते हैं।

प्रश्न 7. लेखक को बीमार पड़ने की इच्छा क्यों हुई?

उत्तर- लोगों को बीमार देखकर उन्हें बीमार पड़ने की इच्छा हुई। बीमार पड़ने पर दो-बार बुलेटिन निकलता और हटले बिस्कुट खाने को मिलते।

प्रश्न 8. लेखक ने वैद्य और हकीम पर क्या-क्या कहकर व्यंग्य किया है? उनमें से सबसे तीखा व्यंग्य किस पर किया गया है? वर्णन कीजिए।

उत्तर- लेखक की नाभि के नीचे दाहिनी ओर पेट में दर्द हो रहा था। सरकारी डॉक्टर देखने आये। उन्होंने जीभ दिखाने को कहा कहते हैं कि प्रेमियों को जो मजा प्रेमिकाओं की आँख देखने में आता है वैसा ही डॉक्टर को मरीजों की जीभ देखने में आता है। बीमारी ठीक नहीं होने पर डॉ० चूहानाथ कातर जी आए। उन्होंने एक छोटी सी पिचकारी निकाली और उसमें लम्बी सूई और दवा डालकर पेट में वह सूई कोंचकर

➡ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखें-

एक प्रकृति-चिकित्सा वाले ने कहा था कि आप गीली मिट्टी पेट पर लपेटकर धूप में बैठिए। एक हफ्ते में वर्द हवा हो जाएगा। हमारे ससुर साहब एक डॉक्टर को लेकर आए। उन्होंने कहा "देखिए साहब, आप पढ़े-लिखे आदमी हैं। समझदार हैं।" मैं बीच में बोल उठा, "समझदार न होता तो आपको कैसे यहाँ बुलाता।"

22. सुदामा चरित्र

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सुदामा चरित के रचयिता कौन है?

उत्तर- सुदामा चरित के रचयिता नरोत्तमदास है।

प्रश्न 2. सुदामा चरित किस भाषा में लिखी गई है?

उत्तर- सुदामा चरित ब्रजभाषा में लिखी गई है।

प्रश्न 3. सुदामा और कृष्ण कौन थे?

उत्तर- सुदामा और कृष्ण बाल सखा थे।

प्रश्न 4. सुदामा की पत्नि को क्षोभ क्यों होता था?

उत्तर- सुदामा की पत्नी को अपनी दरिद्रता पर बड़ा क्षोभ होता था।

प्रश्न 5. कृष्ण ने सुदामा को अपार धन देकर किस बात का परिचय दिया?

उत्तर- कृष्ण ने सुदामा को अपार धन देकर उदारता एवं मित्र-भाव का परिचय दिया।

प्रश्न 6. कृष्ण ने अपने मित्र सुदामा के पैर कौन-से जल से धोये?

उत्तर- कृष्ण ने अपने मित्र सुदामा के पैर नैनों के जल से ही धोये थे।

प्रश्न 7. गुरु के आश्रम की कौन-सी बात की याद श्रीकृष्ण ने सुदामा को दिलाई?

उत्तर- श्रीकृष्ण ने अपने सखा सुदामा से कहा कि गुरुमाता के द्वारा दिये गये चने को तुम अकेले ही खा गये, मुझे नहीं दिये थे।

प्रश्न 8. सुदामा को अपने गाँव वापस आने पर भ्रम क्यों हुआ?

उत्तर- सुदामा जब द्वारिका से अपने घर पहुँचे तो टूटी-फूटी झोंपड़ी के स्थान पर एक विशाल भवन खड़ा देखा। उन्हें भ्रम हो गया कि कहीं वे दूसरी जगह तो नहीं आ गये हैं।

➡ **दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

प्रश्न 1. कृष्ण द्वारा सुदामा को कुछ न देकर सुदामा की पत्नी को सीधे वैभव से सम्पन्न करने का क्या औचित्य था?

उत्तर- सुदामा और कृष्ण की बाल-मित्रता थी। सुदामा के पास कुछ भी न होने पर बे भूखे-प्यासे सो जाते थे किन्तु वह ईश्वर के प्रति अपना रोष प्रकट नहीं करते थे। सुदामा की पत्नी बार-बार आग्रह करती थी कि आप अपने मित्र के पास जाकर आओ वो तो द्वारका के राजा है हमारी सहायता करेंगे किन्तु सुदामा का मन इस बात के लिए नहीं मानता था। वह बहुत कहने पर द्वारका के लिए चलते हैं। द्वारका पहुँचने पर भी वे कृष्ण के सामने अपने दुख को प्रकट नहीं करते हैं किन्तु कृष्ण तो अन्तर्यामी थे वे सुदामा के मन की दशा को जान जाते हैं और सुदामा को अपार वैभव प्रदान करते हैं। सुदामा को तो इस बात का कुछ भी पता नहीं चलता क्योंकि वह धन तो कृष्ण ने सीधे सुदामा की पत्नी को दिया था।

➡ **लघु उत्तरीय प्रश्न**

प्रश्न 1. हिरण शावक को लेखक क्या कहकर सांत्वना देता है?

उत्तर- हिरण के शावक को लेखक कहता है कि तुम्हारी माँ तुम्हें अवश्य मिलेगी। अब तुम सो जाओ।

प्रश्न 2. हिरण पहाड़ पर क्यों रो रहा था?

उत्तर- हिरण अपने समूह से भटक गया है। अतः वह पहाड़ पर रो रहा है।

प्रश्न 3. हिरण राह क्यों भटक गया था?

उत्तर- हिरण खेल में मदमस्त हो रहा था, इसीलिए वह राह भटक गया था।

प्रश्न 4. 'राह भटके हिरण के बच्चे को' का सारांश अपने शब्दों में लिखिए। हिरण का शावक अपनी माँ से अलग हो गया था। इस कारण वह पहाड़ पर रो रहा

उत्तर- था। लेखक कहता है कि वह नन्हा सा हिरण है अतः इस कारण मैं उसके लिए दुखी

हूँ। उसकी दोनों आँखों में एक पीड़ा थी। लेखक कहता है कि हे हिरण के बच्चे तू रो मत बल्कि आराम से सो जा तुझे तेरी माँ अवश्य मिल जायेगी। ये बाँस के वन आँक के वन और ये रात को हवा सब तुझे लोरी सुना रहे हैं। तू डर मत बिना किसी डर के सो जा। देख आकाश तारों से भरा है, और नीचे नरम नरम पत्ते झड़े हुए हैं तू चुपचाप सो जा।

➡ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'राह भटके हिरन के बच्चे को' नामक पाठ का सारांश लिखिए।

उत्तर- **सारांश**

कवि कहता है कि सर्दी की रात में एक हिरण खेल में मदमस्त था इसलिए वह राह भटक गया। वह एक नन्हा सा हिरण लेखक कहता है कि मैं उसके लिए बहुत दुखी हूँ। मैंने उसको दोनों खुली आँखों में पीड़ा देखी है। हिरन के बच्चे तू रो मत तुझे तेरी माँ जरूर मिल जायेगी। तू सो जा, सो जा ये बाँस के वन, आक के वन ये रात को सर्द हवा सब तुझे लोरी सुना रहे हैं। तू इससे डर मत बिना किसी डर के सो जा। आकाश तारों से भरा है। नीचे झड़े हुए ढेरों के ढेर पत्त जो कितने मुलायम है हिरन के बच्चे तू सो जा।

तू सो जा सुबह तक जब सूर्य उदय होगा तब उसकी सुनहरी किरणें इन गिरे हुए जंगलों के पत्तों को धुएँगी, तब तुझे तेरी माँ भी मिल जाएगी। तू रो मत, रो मत हे नन्हें से हिरण तू रो मत।

A A ONLINE SOLUTION BY ASHFAQUE SIR

पत्र-लेखन

1. सेवा में,

श्रीमान प्रधानाध्यापक महोदय
जनता उच्च विद्यालय, दरभंगा

द्वारा: वर्ग शिक्षक महोदय

विषय : इलाज कराने के लिए छुट्टी हेतु आवेदन

महाशय,

सविनय निवेदन है कि मैं पिछले चार-पाँच दिन से स्वस्थ नहीं हूँ। रोज रात को तेज बुखार आ जाता है और पूरे दिन सिर में दर्द रहता है। इसलिए मुझे अपना इलाज एक अच्छे डॉक्टर से आवश्यक हो गया है।

अतः श्रीमान् से अनुरोध है कि दिनांक **17.02.2023** से **21.02.2023** तक छुट्टी देने की कृपा करें ताकि मैं अपना समुचित ईलाज करा सकूँ।

इस पुनीत कार्य के लिए मैं सदैव आपकाआभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी छात्र
मुंतशिर आलम
वर्ग - **X**
रौल नम्बर - **05**

दिनांक **16.10.2023**

2. सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय
उच्च विद्यालय फतेहपुर पटना -7

विषय : परीक्षा शुल्क माफ करने हेतु आवेदन

महाशय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय का नियमित छात्र हूँ। मेरे पिताजी पिछले तीन माह से बीमार हैं। जिस कारण हमारे घर की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई है। इस कारण से मैं

अर्द्धवार्षिक परीक्षा के लिए परीक्षा शुल्क जमा करने में असमर्थ हूँ।

अतः श्रीमान् से अनुरोध है कि मेरे आवेदन पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करते हुए मेरा परीक्षा शुल्क माफ करने की कृपा की जाय ताकि मैं अर्द्धवार्षिक परीक्षा में सम्मिलित हो सकूँ।

इसके लिए मैं श्रीमान् का सदा आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी छात्र
मो० नकी रजा
वर्ग - **X**
रौल नम्बर – **04**

दिनांक **16.10.2023**

पत्र-लेखक से छोटा और निकट संबंधी
(पुत्र, पुत्री, छोटा भाई, छोटी बहन आदि)

3. प्रिय राजीव,

शुभाशीर्वाद।

कल तुम्हारा पत्र मिला, जिसमें तुमने मुझे घर आने का अनुरोध किया है। मुझे याद है कि **22** नवम्बर को मेरे सबसे प्यारे और छोटे भाई का जन्मदिन है। आने वाले जन्मदिन केउपलक्ष्य में मैं तुम्हें हार्दिक बधाई देता हूँ। मैं ईश्वर से कामना करता हूँ कि तुम्हारा भावी जीवन सुखद और मंगलमय हो। ईश्वर तुम्हारी संपूर्ण इच्छाओं को पूर्ण करें।

इस शुभ अवसर पर मैं तुम्हारे लिए तुम्हारा पसंदीदा उपहार निबंधित डाक से भेज रहा हूँ। करोना महामारी के बाद मेरे कम्पनी का काम बढ़ गया है। कम्पनी मुझे एक महीने के कारण दिल्ली से मुंबई भेज रही है। इस कारण से मैं तुम्हारे जन्मदिन पर उपस्थित नहीं हो सकता। उम्मीद हैं तुम इसे अन्यथा नहीं लोगे। मेरा आशीर्वाद सदैव तुम्हारे साथ है। पुनः जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई।

दिनांक **28.10.2023**

तुम्हारा प्यारी बहन
रीफ़त प्रवीन

पत्र-लेखक की बराबरी वाला और उसका निकट संबंधी : मित्र आदि

4. प्रिय मित्र विजय

सस्नेह नमस्कार।

मित्र, पिछले सप्ताह हमारे विद्यालय में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसमें अनुमंडलान्तर्गत विद्यालय के अनेक छात्र भाग लिये। इस प्रदर्शनी में विज्ञान से जुड़ी कई सारी महत्त्वपूर्ण खोज और वैज्ञानिक चमत्कारों का प्रदर्शन किया गया। विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए कई मॉडल हैरत करने वाले थे। किसी ने पानी में चलने वाला कार बनाया तो किसी ने रिमोट से रॉकेट उड़ाया।

इस प्रदर्शनी के माध्यम से हम विज्ञान के कई अनजान पहलुओं से अवगत होसके और कई गूढ़ जानकारियाँ भी प्राप्त हुई। इस प्रकार प्रदर्शनी बच्चों के विकास के लिए और विज्ञान को समझने के लिए आवश्यक है।

शेष सब कुशल है। बड़ों को प्रणाम और छोटों को शुभाशीष।

दिनांक **4.11.2023**

तुम्हारा मित्र

मो० काशिफ

निबंध

1. गणतंत्र दिवस

विचार बिन्दु- 1. भूमिका, 2. इतिहास, 3. महत्त्व, 4. उपसंहार।

भूमिका - प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को मनाया जाने वाला गणतंत्र दिवस भारत का एक महान राष्ट्रीय पर्व है। इसे पूरे भारतवासी पूरे उत्साह जोश और सम्मान के साथ मनाते हैं। यह किसी विशेष धर्म, जाति या सम्प्रदाय से न जुड़कर राष्ट्रीयता से जुड़ा है, इसलिए देश का प्रत्येक भारतवासी गणतंत्र दिवस को राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाता है। यह वह दिन है जब जब भारत में गणतंत्र और संविधान की स्थापना हुई थी।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम की स्मृति ताजी हो जाती है। हमें यह याद हो जाता है कि किस तरह आजादी के दिवाने देशभक्तों के जीवन भर के संघर्षों के परिणाम स्वरूप 15 अगस्त, 1947 को हमारा देश आजाद हुआ और 26 जनवरी, 1950 को एक धर्मनिरपेक्ष, लोककल्याणकारी, सार्वभौमिक गणराज्य के रूप में उदय हुआ।

इतिहास - आजादी के पश्चात डॉ० भीमराव अम्बेदकर ने पहली बार संविधान की रूप रेखा संविधान सभा के समक्ष प्रस्तुत किया। कुछ संशोधनों के उपरांत नवंबर 1949 में इसे स्वीकार कर लिया। संविधान सभा के सभी सदस्य चाहते थे कि इसे ऐसे दिन पारित किया जाए जो देश के गौरव से जुड़ा हुआ दिन हो। तब सबकी सहमति से निर्णय लिया गया कि पूर्ण स्वराज दिवस (26 जनवरी) के दिन भारत का संविधान लागू किया जाए। इसलिए हमारी संसद ने 26 जनवरी, 1950 को पारित किया। इसके साथ ही भारत लोकतांत्रिक गणराज्य बना। तभी से 26 जनवरी को पूरे हर्षोल्लास के साथ भारतवासियों द्वारा गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

महत्त्व - हमारे संविधान ने देश के प्रत्येक नागरिक को समान रूप से राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक अधिकार दिये हैं। गणतंत्र दिवस का पर्व हमारे अंदर आत्मगौरव भरने तथा पूर्ण स्वतंत्रता की अनुभूति कराता है।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर दिल्ली के लाल किला पर झंडारोहण किया जाता है। राष्ट्रगान के बाद राजपथ पर भारतीय सेना द्वारा भव्य परेड का आयोजन होता है। भारत में आजादी के बाद 'विविधता में एकता' के अस्तित्व को दिखाने के लिए राष्ट्रीय और प्रांतीय स्तर पर झांकियों का प्रदर्शन किया जाता है। इसके माध्यम से देश अपनी संस्कृति परम्परा और प्रगति को प्रदर्शित करते हैं।

उपसंहार - गणतंत्र दिवस प्रत्येक भारतवासी के लिए महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्व है। यह पर्व कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक गाँव-गाँव में, शहर-शहर में, घर-घर में उत्साह के साथ मनाया जाता है। देश के सारे स्कूलों, कॉलेजों, राजकीय संस्थानों से लेकर गाँव के चौपालों तक दिन भर उत्सव चलता रहता है। 'वन्दे मातरम' की सुमधुर ध्वनि सर्वत्र गूँजती रहती है। वास्तव में यह शुभ दिन भारत के लिए गौरवमय दिन है।

2. वर्षा ऋतु

विचार बिन्दु- 1. प्रारंभ, 2. सौन्दर्य, 3. उपसंहार।

प्रारंभ - वर्षा ऋतु असहनीय गर्मी के बाद सभी के जीवन में उम्मीद और राहत की फुहार लेकर आता है। इंसानों के साथ ही पेड़-पौधे, चिड़िया और जानवर सभी उत्सुकता के साथ इसका इंतजार करते हैं। वर्षा की बूंदे धरती को सराबोर कर देती है। लोगों को गर्मी से काफी राहत मिलती है। वर्षा ऋतु में तालाबों, नहरों में पानी भर जाता है, पानी की किल्लत दूर हो जाती है। बरसात के मौसम में चारों ओर हरियाली छा जाती है। पेड़-पौधे तेजी से बढ़ने लगते हैं और वातावरण खुशनुमा हो जाता है। किसान अपने फसलों की हरियाली देख खुशी से झूम उठता है। सचमुच प्रकृति का सबसे सुंदर स्वरूप देखने का सुख वर्षा ऋतु में ही प्राप्त होता है।

सौंदर्य - वर्षा को ऋतुओं की रानी कहा गया है। इस ऋतु में प्रकृति रानी पल-पल परिधान परिवर्तित कर अपनी अद्भूत छटा दिखाने लगती हैं। उमड़ते-घुमड़ते बादलों को देखकर केवल मोर ही नहीं नाचते अपितु बच्चों की टोलियाँ भी अपनी प्रसन्नता झमाझम वर्षा में चहक चहककर स्नान कर व्यक्त करते हैं। दादुर की ध्वनि तथा झींगुर की झंकार एक संगीतमय वातावरण उपस्थित करती है।

वर्षा ऋतु में प्रकृति का सौंन्दर्य देखते ही बनता है। हर तरफ हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है। पेड़-पौधे और लताओं में नयी पत्तियाँ आ जाती है। फूल खिलने लगते हैं। हमें आकाश में इंद्रधनुष देखने का बेहतरीन मौका मिलता है। मानव पशु-पक्षी, पेड़-पौधे सबों में नवजीवन का संचार होता है।

उपसंहार - वर्षा ऋतु हम सभी के लिए प्यारा मौसम होता है। प्यासी धरती पर अमृत की बूंदे झड़ने लगती है। किसानों के चेहरे पर मुस्कान दौड़ जाती है। यह किसानों के लिए वरदान से कम नहीं होता। यह ऋतु पर्यावरण को नई सुंदरता प्रदान करती है।

निष्कर्षत - वर्षा ऋतु हम सभी के लिए प्यारा मौसम होता है लेकिन ज्यादा बारिश कभी-कभी जल प्रलय का कारण भी बन जाता है। जिससे जान-माल को भारी नुकसान भी होता है। इस प्रकार वर्षा ऋतु के ढेर सारे फायदे के साथ नुकसान भी है।

3. वृक्षारोपण

विचार बिन्दु- 1. भूमिका, 2. वृक्ष की महत्ता, 3. लाभ, 4. कटाई से हानि, 5. निष्कर्ष।

भूमिका - वृक्षारोपण का शाब्दिक अर्थ है-वृक्ष लगाकर उन्हें उगाना, इसका प्रयोजन करना। हमारे देश की सभ्यता और संस्कृति वनों में ही पल्लवित हुई है। भारत में न केवल देवी देवताओं की अपितु प्रकृति प्रदत वृक्षों की भी पूजा होती है। इन वृक्षों में देवताओं का वास माना जाता है।

मानव सभ्यता को भोजन, वस्त्र और आवास की समस्याओं का समाधान इन्हीं वृक्षों से हुआ है। वृक्ष अधिक होंगे तो प्रकृति का संतुलन होगा, वर्षा होगी, फसल होगी, मनुष्य की क्षुधा पूत्ति होगी। इसलिए हमारे समाज में वृक्षारोपण की आवश्यकता तेजी से महसूस की जा रही है। यह मानव समाज का सांस्कृतिक दायित्व है।

वृक्ष की महत्ता - मानव के जीवन को सुखी, समृद्ध व संतुलित बनाए रखने के लिए वृक्षारोपण का अपना विशेष महत्त्व है। वृक्ष हमें लंबे जीवन की प्रेरणा प्रदान करते हैं। वे धरती पर वर्षा कराते हैं, धरती की गर्मी को कम करते हैं, पर्यावरण को शुद्ध करते हैं। वृक्षों से मनुष्य के हृदय को शांति मिलती है। ये हमें स्वार्थी बनने से रोकते हैं और हमें दूसरों को उपकार करने की प्रेरणा देते हैं। अतः वृक्षों की महत्ता तब तक धरती पर बनी रहेगी जब तक मनुष्य का जीवन इस धरती पर रहेगा।

लाभ - वृक्ष से अनेक लाभ हैं। बड़े-बड़े नीम, पीपल, वट वृक्ष हवा को शुद्ध करते हैं। वृक्ष भूमि का क्षरण रोकते हैं। वृक्ष वर्षा कराते हैं। इससे अच्छी फसलें होती है जिन्हें खाकर जीवित रहते हैं। पत्तों से खाद बनती है, सुखी टहनियाँ से ईंधन मिलता है। इनसे अनेक प्रकार की औषधियाँ मिलती है, कागज बनते हैं। इनसे पर्यावरण संतुलन बना रहता है।

कटाई से हानि - आजकल आधुनिक एवं वैज्ञानिक युग से वृक्षों की अंधा-धुंध कटाई हो रही है। लोग फर्नीचर एवं ईंधन के लिए पेड़ों की कटाई कर रहे हैं। इससे धरती का संतुलन बिगड़ रहा है। जंगल खलिहान बन रहे हैं, वर्षा कम हो रही है, धरती मरुभूमि बन रहे हैं।

ऑक्सीजन एवं ओजोन की मात्रा बढ़ती जा रही है। इसलिए वृक्षों की अंधाधुंध कटाई की प्रतिपूर्ति आवश्यक है।

निष्कर्ष - वृक्षों के फैलाव के सिमटने का कारण बढ़ती हुई जनसंख्या है। अब हमें वनों का नंगापन और भवनों में दस मंजिला ऊँची इमारतें नजर आती है। आज का स्वार्थी मानव पेड़ तो काटता गया लेकिन पेड़ लगाना भूल गया। इसलिए आवश्यक है जितने पेड़ काटे जाएँ, उससे कहीं अधिक रोपे जाएँ। वृक्षों की रक्षा करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। अपने और आने वाली पीढ़ी 'के जीवन को बचाने के लिए हमें वृक्षारोपण करना ही होगा।

4. मेरा प्रिय खेल (फुटबॉल)

विचार बिन्दु - 1. भूमिका, 2. लाभ, 3. निष्कर्ष।

भूमिका - स्वस्थ जीवन और सफलता के लिए एक व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की आवश्यकता होती है। नियमित शारीरिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए खेल सबसे अच्छा तरीका है।

यू तो भारत में कई प्रकार के खेल प्रचलित हैं। इसमें प्रमुख है-फुटबॉल, टेनिस, बैडमिंटन तथा क्रिकेट। वर्तमान समय में क्रिकेट सर्वाधिक लोकप्रिय है परंतु यह खर्चीला और उबाऊ है। इनमें समय की बर्बादी भी होती है। इसलिए मेरा प्रिय खेल फुटबॉल है।

फुटबॉल का खेल खुले मैदान में खेला जाता है। यह खेल दो दलों के बीच होता है। प्रत्येक दल में 11-11 खिलाड़ी होते हैं। जिनका लक्ष्य एक दूसरे के खिलाफ अधिकतम गोल करना होता है। इस खेल की अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता 90 मिनट की होती है।

लाभ - फुटबॉल वह खेल है जो व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से स्वस्थ और अच्छा बनाता है। यह मनोरंजन का महान स्रोत है जो शरीर और मन को तरोताजा करता है। फुटबॉल के खेल में खिलाड़ी खेल-खेल में ही जीवन के संघर्षों और उत्तार-चढ़ाव से भली-भाँति परिचित हो जाता है। इस खेल से सहयोग और दलीय अनुशासन की भावना स्वतः आ जाती है। खेल के मैदान में खिलाड़ी अपनी स्वतंत्र सत्ता को भूल जाता है। उसके सामने दल

के सम्मान की रक्षा मुख्य ध्येय बन जाता है। खेल में किसी एक खिलाड़ी की जीत या हार नहीं होती, जीत-हार पूरी टीम की होती है, जो सभी खिलाड़ियों को टीम भावना सिखाता है।

निष्कर्ष - फुटबॉल एक अंतर्राष्ट्रीय खेल है। इस खेल से उच्च भावना का विकास होता है। लेकिन जब टीम का कोई सदस्य विपक्षी टीम से मिलकर परिणाम को प्रभावित करता है तो खेल भावना को हानि पहुँचती है। फुटबॉल खेल के द्वारा विद्यार्थियों में ऐसी भावना पनपायी जा सकती है जिसे

अंग्रेजी में स्पोर्टसमेन्स स्पीरिट करते हैं। खेल के प्रारंभ से अंत तक खिलाड़ी पूरी तन्मयता के साथ खेलता है। वहाँ की जय-पराजय को जीवन की जय-पराजय से भी अधिक सत्य मानक अपनी टीम को विजय दिलाने में वह अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं। पर खेल खत्म होते ही वह अपनी जय-पराजय को भूलकर अपने विरोधी दल के सदस्यों से घनिष्ट मित्रों की भाँति दिल खोलकर मिलता है। जीवन भी एक खेल का मैदान है। यहाँ भी सफलता पाने के लिए ऐसी ही 'स्पीरिट' की आवश्यकता है।

5. होली

विचार विन्दु- 1. भूमिका, 2. धार्मिक संदर्भ, 3. लाभ, 4. हानि, 5, उपसंहार।

भूमिका - होली एक ऐसा रंगबिरंगा त्योहार है जो एक साथ मौज-मस्ती, रखानी-जबानी, रंगीली, अलमस्ती की याद दिलाती है। रंग और उल्लास का पर्व होली मनाने की तैयारी वसंत पंचमी से ही शुरू हो जाती है। भारतवर्ष के कोने-कोने में यह उत्सवं पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। फाल्गुन मास की पूर्णिमा की शाम मुहूर्त के अनुसार होलिका कुंड का पूजन कर होलिका दहन किया जाता है।

होलिका-दहन के दूसरे दिन लोग एक-दूसरे पर रंग डालते हैं और गुलाल मलते हैं फिर होली मिलन में लोग वैर-भाव भूलकर गले मिलते हैं।

धार्मिक संदर्भ - यह पर्व भारतीय संस्कृति में धार्मिक संदर्भ से जुड़ा हुआ है। मान्यता है कि हिरण्यकश्यप नामक एक दानवराज था। स्वयं को ही भगवान मान बैठे हिरण्यकश्यप ने भगवान की भक्ति में लीन अपने ही पुत्र प्रहलाद को अपनी बहन होलिका के जरिये जिंदा जला देना चाहा था। लेकिन भगवान ने भक्त पर कृपा की। प्रहलाद के लिए बनाई चिता में स्वयं

होलिका जल गई जबकि उसे अग्निदेव का वरदान प्राप्त था। इसी धार्मिक संदर्भ के आधार पर होलिका दहन की परंपरा है। नास्तिकता पर आस्तिकता की बुराई पर भलाई की विजय के प्रतीक के रूप है। होलिका दहन के अगले दिन हर्षोल्लास के साथ होली मनाई जाती है।

लाभ - होली का यह पर्व पाप पर पुण्य तथा दानवता पर देवत्व के विजय का प्रतीक है। हर्षोल्लास का यह पर्व होली प्रीति का पेय है। यह पर्व हमें वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष को भूलने तथा परस्पर प्रेम, स्नेह एवं एकता की भावना के साथ रहने का संदेश देता है। सभी लोग इस दिन अपने सारे गिले, शिकवे भुलाकर एक-दूसरे को रंग-अबीर लगाकर गले लगाते हैं। होली के रंग हम सभी को जोड़ता है और रिश्तों में प्रेम और अपनत्व के रंग भरता है।

हानि - कुछ अबोध जन इस दिन दूसरों पर सड़ा कीचड़ उछालते हैं, पत्थर फेंकते हैं, मद्यपान कर शर्मनाक गाने और गाली-गलौज करते हैं। कुछ लोग इस अवसर पर पुरानी अदावत का बदला लेना चाहते हैं, वर्गगत, जातिगत तथा संप्रदायगत विद्वेष का विष फैलाना चाहते हैं। वे भूल जाते हैं कि होली शत्रुता के विरुद्ध मित्रता, गंदगी के विरुद्ध स्वच्छता एवं अनेकता के विरुद्ध एकता का पर्व है।

उपसंहार - होली एक सामाजिक पर्व है। होली भारत की सांस्कृतिक परंपरा का प्रतीक है और यह हमें प्रेम, स्नेह, भ्रातृत्व तथा एकता का पाठ पढ़ाता है। अतः हमें असामाजिक प्रवृत्तियों तथा शर्मनाक आचारण से दूर रहना चाहिए।

6. दीपावली

विचार बिन्दु- 1. भूमिका, 2. दीपावली का महत्त्व, 3. दीपावली का प्रारंभ, 4. निष्कर्ष।

भूमिका - दीपावली अर्थात् दीपोत्सव कार्तिक मास के अमावस्या को मनाया जाने वाला एक प्राचीन हिन्दू त्योहार है। दीपावली का त्योहार भारत के प्रमुख त्योहारों में से एक है जिसे हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। यह त्योहार आध्यात्मिक रूप से अंधकार पर प्रकाश की विजय को दर्शाता है।

दीपावली का महत्त्व - भारतवर्ष में मानाए जाने वाला इस त्योहार का सामाजिक आर्थिक और धार्मिक रूप से अत्यधिक महत्त्व है। अंधकार पर प्रकाश की विजय का यह पर्व समाज में उल्लास, भाई-चारे व प्रेम का संदेश फैलाता है।

तमसो माँ ज्योतिर्गमय।

दीपावली के अवसर पर घर तथा आस-पास के परिवेश को विशेष रूप से स्वच्छ किया जाता है जो स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। दीपावली स्वच्छता व प्रकाश का पर्व है।

दीपावली का प्रारंभ - दुर्गा पूजा के बाद से ही दीपावली की तैयारी आरंभ हो जाती है। लोग अपने घरों, दुकानों आदि की सफाई आरंभ कर देते हैं। घरों में मरम्मत, रंग-रोगन, सफेदी आदि का कार्य होने लगता है। दीपावली के अवसर पर घर-मोहल्ले, बाजार सब साफ सुथरे व सजे-धजे नजर आते हैं। दीपावली के दिन धन एवं ऐश्वर्य की देवी लक्ष्मी की पूजा होती है। शाम को लोग दीये जलाते हैं। पटाखे फोड़ते है एवं एक दूसरे को मिठाइयाँ बाँटते हैं।

दीपावली मनाने की परंपरा भगवान राम की लंका विजय से है। इसी दिन चौदह वर्षों का वनवास समाप्त कर श्रीराम अयोध्या लौटे थे। उनकी वापसी पर अयोध्यावासियों ने दीप जलाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की थी।

कुछ लोग यह भी मानते हैं कि युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ की पूर्णाहुति की प्रसन्नता से यह त्योहार का आरंभ हुआ था। जैन धर्मानुयायी इस दिन को भगवान महावीर के निर्वाण दिवस के रूप में मनाते हैं।

निष्कर्ष - बुराई पर अच्छाई की जीत का यह त्योहार प्रत्येक वर्ष देश विदेश में पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। यह एक ऐसा विशिष्ट पर्व है जो धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक विशिष्टता रखता है। यह पूरे भारतवर्ष में एकता के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।

7. बेरोजगारी समस्या और समाधान

बिचार बिन्दु- 1. बेरोजगारी का अभिप्राय, 2. बेरोजगारी की समस्या, 3. बेरोजगारी के कारण, 4. विकास में बाधक, 5. समाधान।

बेरोजगारी का अभिप्राय - प्राचीन काल में भारत आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न राष्ट्र था। इसे 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। आज हमारे देश में जो अर्थव्यवस्था व्याप्त है उसकी जड़ में बेरोजगारी की समस्या विकराल है।

बेरोजगारी उस स्थिति को कहा जाता है जिसमें काम करने को इच्छुक और समर्थ लोगों को मजदूरी के प्रचलित दर से कम पर भी काम का न मिलना। यह एक ऐसी समस्या है जो निरंतर कई वर्षों से हमारे देश में बनी हुई है।

बेरोजगारी की समस्या - बेरोजगारी की समस्या राष्ट्रव्यापी समस्या है। यह समाज के लिए अभिशाप है। इसका प्रभाव मानव जीवन और सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। भारत जैसी अल्प विकसित अर्थव्यवस्था में यह विस्फोट रूप धारणकिये हुए है।

बेरोजगारी के कारण - हमारे देश में बेरोजगारी का प्रमुख कारण है- जनसंख्या की अतिशय वृद्धि, तकनीकी शिक्षा का अभाव, अनावश्यक शिक्षा प्रणाली, लघु एवं कुटीर उद्योगों का ह्रास, कृषि का पिछड़ापन, अव्यवहारिक सरकारी नीति इत्यादि। हाल के दशकों में जनसंख्या जिस तीव्र गति से बढ़ी है उस गति से रोजगार नहीं बढ़े। फलतः उस जनसंख्या के एक बढ़े भाग को आज व्यापक बेरोजागारी का सामना करना पड़ रहा।

विकास में बाधक - बेरोजगारी देश के सम्मुख एक प्रमुख समस्या है जो प्रगति के मार्ग को तेजी से अवरुद्ध करती है। बेरोजगारी की बढ़ती समस्या आमलोगों की प्रगति, शांति और स्थिरता के लिए चुनौती बन रही है। बेरोजगार युवक आज गलत दिशा की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं। इससे देश में सामाजिक और आर्थिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

समाधान - बेरोजगारी की समस्या जटिल अवश्य है किन्तु इसका हल निकाला जा सकता है। इसके लिए दोष रहित आर्थिक नियोजन एवं आधारभूत ढाँचे का विकास आवश्यक है। कृषि और कुटीर उद्योगों की स्थिति में सुधार के साथ-साथ जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करना होगा। शिक्षा व्यवस्था को रोजगारोन्मुख बनाना होगा ताकि युवा स्वावलंबी बनने का प्रयास करे। सरकार को भी चाहिए कि वह एक व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाएँ और बेरोजगारी की समस्या को बढ़ने न दे।

8. स्वास्थ्य और व्यायाम

विचार बिन्दु- 1. स्वस्थ तन मन के बिना जीवन बोझ, 2. शारीरिक स्वास्थ्य और व्यायाम, 3. मानसिक स्वास्थ्य और व्यायाम, 4. स्वस्थ व्यक्ति से स्वस्थ समाज का निर्माण, 5. निष्कर्ष।

स्वस्थ तन मन के बिना जीवन बोझ - मानव जीवन की आधारशिला उसका स्वास्थ्य और निरोग जीवन है। अंग्रेजी में कहावत है- 'Health is wealth' अर्थात् स्वास्थ्य ही धन है। अस्वस्थ व्यक्ति न अपना कल्याण कर सकता है, न अपने परिवार का न ही अपने समाज और न देश का।

शास्त्रों में कहा गया है कि "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।" अर्थात् सभी धर्म साधनों का मूल आधार शरीर ही है। अतः जब तक यह पूर्ण स्वस्थ नहीं रहेगा तब तक हम किसी कार्य में सफलता नहीं प्राप्त कर सकते यानी स्वस्थ तन-मन के बिना जीवन बोझ हो जायेगा।

शारीरिक स्वास्थ्य और व्यायाम - प्राचीन काल से ही शारीरिक स्वास्थ्य की महता पर बल दिया जाता रहा है। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक भोजन, चिंतामुक्त जीवन, उचित विश्राम और पर्याप्त व्यायाम की आवश्यकता होती है। उत्तम स्वास्थ्य के लिए व्यायाम सर्वोत्तम साधन है। व्यायाम करने से शरीर पुष्ट और बलवान होता है। इससे पाचन शक्ति बढ़ती है और भूख भी लगती है। व्यायाम से शरीर में चुस्ती और स्फूर्ति बनी रहती है।

मानसिक स्वास्थ्य और व्यायाम - शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य के लिए व्यायाम विशेष आवश्यक है। इससे शरीर में रक्त संचार नियमित रहता है। इससे शरीर और मस्तिष्क पुष्ट होते हैं। अंग्रेजी में कहावत है-A sound Mind in a sound body. अर्थात् स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है। ज्ञान, बुद्धि, विवेक और परिमार्जित मस्तिष्क सुंदर स्वास्थ्य की ही देन।

स्वस्थ व्यक्ति से स्वस्थ समाज का निर्माण- स्वस्थ व्यक्ति ही स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकता है। जीवन की सफलता स्वास्थ्य पर आधारित है और स्वास्थ्य व्यायाम पर। अस्वस्थ व्यक्ति न अपना कल्याण कर सकता है न परिवार का न समाज का। इसलिए आदर्श एवं स्वस्थ समाज के निर्माण में स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन परम आवश्यक है।

निष्कर्ष - आज के आधुनिक जीवन शैली में व्यायाम की उपयोगिता अत्यधिक बढ़ गई है। वर्तमान दौर में शारीरिक श्रम को तिरस्कार और उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है। परिणामस्वरूप हमारा स्वास्थ्य क्षीण होता जा रहा है और शारीरिक क्षमता पंगु होती जा रही है। इसलिए सुंदर शरीर, निर्मल मन तथा विवेकपूर्ण बुद्धि के लिए व्यायाम नियमित रूप से परम आवश्यक है।

9. बढ़ती महँगाई

विचार बिन्दु-1. महँगाई की मार 2. निरंतर बढ़ती महँगाई 3. सरकार के दावे 4. आम लोगों पर प्रभाव 5. उपसंहार।

महँगाई की मार - पिछले दो दशकों से महँगाई द्रौपदी के चीर की तरह निरंतर बढ़ती जा रही है। विभिन्न वस्तुओं के मूल्य में अप्रत्याशित वृद्धि को देखकर आश्चर्य होता है। निरंतर बढ़ती हुई महँगाई भारत जैसे विकासशील देश के लिए निश्चित ही भयानक अभिशाप कहा जा सकता है।

निरतंर बढ़ती महँगाई - बढ़ती हुई महँगाई का सर्वाधिक मुख्य कारण बढ़ती हुई जनसंख्या है। पिछले 50 वर्षों में हमारे देश की जनसंख्या लगभग तीन गुनी हो गई है। जनसंख्या की वृद्धि के अनुपात से विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि नहीं हुई। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती है, वैसे-वैसे विभिन्न वस्तुओं की माँग में 'वृद्धि होती है। माँग के अनुपात में यदि वस्तुओं की पूर्ति में वृद्धि नहीं होती, तो महँगाई का बढ़ना स्वाभाविक ही है। पिछले दशक में विभिन्न वस्तुओं पर लगाए गए करों में भी बहुत अधिक वृद्धि हुई है। बढ़ती हुई महँगाई का एक महत्त्वपूर्ण कारण व्यापारी वर्ग में बढ़ती हुई मुनाफाखोरी व जमाखोरी की प्रवृत्ति भी है। बड़े-बड़े व्यापारी प्रायः आवश्यक वस्तुओं का स्टॉक कर लेते हैं। इस प्रकार के वस्तुओं को वे मनमाने भाव बेचते हैं। गेहूँ, घी, चावल, चीनी जैसी आवश्यक वस्तुएँ महँगे मूल्य पर भी खरीदने के लिए लोगों को विवश होना पड़ता है। वर्तमान युग में नेताओं को चुनावों में अत्यधिक धनराशि व्यय करनी पड़ती है। चुनाव में खर्च किया गया अधिकांश धन व्यापारी वर्ग से चंदे के रूप में आता है।

चुनाव के पश्चात् व्यापारी वस्तुओं के मूल्य बढ़ा देते हैं। इस प्रकार नेताओं और व्यापारियों की मिली भगत से महँगाई निरंतर बढ़ती चली जाती है।

हमारे देश में निरंतर बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार भी मूल्य वृद्धि का एक मुख्य कारण है। प्राकृतिक आपदाएँ भी मूल्य वृद्धि में एक सीमा तक सहायक हैं। हमारे देश में कभी सूखा पड़ जाता है, तो कभी विभिन्न नदियों में बाढ़ आ जाती है। प्रतिवर्ष हजारों व्यक्ति बाढ़ की चपेट में आकर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं तथा लाखों हेक्टेयर भूमि पर लहलहाती फसलें पानी में डूब जाती हैं।

सरकार के दावे - महँगाई पर नियंत्रण पाने के लिए सरकार को कठोर कदम उठाना चाहिए तथा जनता को भी सादगीपूर्ण जीवन-शैली में निष्ठा रखनी चाहिए। इसके अतिरिक्त आवश्यक पदार्थों के उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि होनी चाहिए। चुनाव वगैरह के नाम पर पैसों का अपव्यय न हो, यह ध्यान देना आवश्यक होगा।

आप लोगों पर प्रभाव - निम्न वर्ग तथा मध्यवर्ग के लोगों के साथ उच्चवर्ग के लोग भी महँगाई से त्रस्त हो उठे हैं। महँगाई का सबसे अधिक प्रभाव निम्न मध्य वर्ग पर हुआ है। इस वर्ग के लोग अपना सामाजिक स्तर भी बनाए रखना चाहते हैं तथा स्वयं को चक्रव्यूह में भी फैसा हुआ अनुभव करते हैं। अधिकांश वेतनभोगी कर्मचारी इस कमरतोड़ महँगाई के समक्ष घुटने टेक बैठे हैं। महँगाई के विकराल दानव ने आज संपूर्ण भारतीय समाज को आतंकित कर दिया है। भारत में 90% लोग महँगाई के दुष्चक्र में फंसे हुए हैं।

उपसंहार - देश के नेता बार-बार आश्वासन देते हैं कि महँगाई को रोकने के लिए कारगर उपाय किये जा रहे हैं, परंतु नेताओं के आश्वासन पूर्णतः असफल सिद्ध हो रहे हैं। भारत एक निर्धन देश है। इस देश में मूल्यों का इस प्रकार बढ़ना निश्चय ही बहुत भयानक है। मूल्य वृद्धि के कारण जनता की क्रयशक्ति बहुत ही कम हो गई है।

10. राष्ट्रीय खेल हॉकी

विचार बिन्दु- 1. भूमिका, 2. खिलाड़ी और हॉकी खेलने का समय, 3. महत्त्व, 4. निष्कर्ष।

भूमिका- भारत का राष्ट्रीय खेल हॉकी विश्व के लोकप्रिय खेलों में एक है। यह खुले मैदान में खेले जाने वाला एक खेल है। इसमें दो टीमें हिस्सा लेती है, जिसके 11-11 खिलाड़ी मैदान में खेलते हैं।

यह खेल भारत के अलावा हॉलैण्ड, जर्मनी, पाकिस्तान, आस्ट्रेलिया, इंग्लैण्ड आदि देशों में खेला जाता है। विश्व के सबसे बड़े अन्तर्राष्ट्रीय खेल आयोजन 'ओलम्पिक' के साथ-साथ राष्ट्रमंडल खेल एवं एशियाई खेलों में भी हॉकी शामिल किया जाता है।

खिलाड़ी और हॉकी खेलने का समय- हॉकी का खेल बहुत कम समय में खेला जाता है। यह दो टीमों के बीच खेला जाता है। जिस टीम के खिलाड़ी विपक्षी टीम की नेट में अधिक गोल करता है, वह टीम विजयी मानी जाती है। यह खेल तकरीबन 60 मिनट के लिए खेला जाता है, जो चार भागों में पूर्ण होता है। जिसमें हर 15 मिनट बाद ब्रेक रहता है। इस खेल को खेलने के लिए एक गेंद और एक स्टिक यानी छड़ी का इस्तेमाल किया जाता है।

भारत में मेजर ध्यानचंद ने हॉकी को लोकप्रिय बनाया था। उन्हें हॉकी का जादूगर कहा जाता है। हॉकी के प्रसिद्ध अन्य खिलाड़ी हैं- धनराज पिल्लै, बलबीर सिंह सीनियर, उद्यम सिंह, मनदीप सिंह इत्यादि।

महत्व - हॉकी क्रिकेट की तरह महँगा और उबाऊ नहीं है। यह किसी भी युवा के द्वारा खेला जा सकता है। यह बहुत ही रुचि और आनंद का खेल है जिसमें बहुत ज्यादा गतिविधियाँ और अनिश्चितता शामिल होती है। यह रफ्तार का खेल है और परिस्थितियाँ बहुत ही शीघ्र बदलती है, जो आश्चर्य पैदा करती है। हॉकी का खेल मनोरंजन के साथ ही अनुशासन का पाठ भी हमें सिखाती है। हॉकी हमें एक जूट होकर खेलना और एक दूसरे के सहयोग का महत्त्व सिखाता है और जीवन में संघर्ष की प्रवृत्ति भी जागृत होती है।

निष्कर्ष - भारत हॉकी के खेल का शिक्षा गुरु रहा है। 1928 से 1956 के बीच भारतीय हॉकी टीम ने देश के लिए लगातार छ: ओलपिक स्वर्ण पदक जीते। यह काल हॉकी का स्वर्ण युग

कहा जाता है। ओलम्पिक खेलों में शीर्ष पर रहने वाली भारतीय टीम सतरह के दशक से पिछड़ती चली गई।

विगत कुछ वर्षों से भारतीय हॉकी टीम का प्रदर्शन अपेक्षाकृत अच्छा रहा है। भारतीय खिलाड़ियों और सरकार को चाहिए कि इस खेल में रुचि लेकर पुनः भारत को गौरवान्वित करने में पूर्ण सहयोग दें।

11. महात्मा गाँधी

विचार बिन्दु- 1. भूमिका, 2. बाल्यकाल, 3. राजनीति, 4. महत्ता, 5. उपसंहार।

भूमिका - महात्मा गाँधी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे। वे उत्तम विचारक और श्रेष्ठ समाज सुधारक थे। इन्होंने सत्याग्रह, शांति व अहिंसा के रास्ते पर चलते हुए अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया। वे जीवन के अंतिम सांस तक देश की सेवा करते रहे। उनके महान कार्यों और उपलब्धियों के कारण राष्ट्र उन्हें राष्ट्रीयता (Father of Nation) के नाम से जानता है।

विश्व पटल पर महात्मा गाँधी एक नाम नहीं अपितु शांति और अहिंसा के प्रतीक है। तभी तो संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2007 से गाँधी जयंती (2) अक्टूबर) को 'विश्व अहिंसा दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की है।

बाल्यकाल - सत्य और अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 ई० को पोरबंदर गुजरात में हुआ था। इनके पिता का नाम करमचंद गाँधी और माता का नाम पुतलीबाई था। इनके पिता पोरबंदर के दिवान थे।

इनकी प्रारंभिक शिक्षा पोरबंदर में हुई। हाई स्कूल की परीक्षा इन्होंने राजकोट से दिया और मैट्रिक की परीक्षा इन्होंने अहमदाबाद से दिया। बाल्यकाल से ही ये औसत विद्यार्थी थे, पढ़ाई में मन नहीं लगता लेकिन उचित और अनुचित का फर्क पता था।

राजनीति - गाँधी जी के राजनीतिक जीवन की शुरुआत दक्षिण अफ्रिका से हुई। दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले भारतीयों का पक्ष लेकर उन्होंने सत्याग्रह आंदोलन चलाया। 1915 ई० में भारत लौटने पर गाँधीजी यहाँ की राजनीति में पूरी तरह कूद पड़े। 1917 के चम्पारण आंदोलन ने

इन्हें राष्ट्रीय स्तर का नेता के रूप में प्रसिद्धि दिलाई। इसके पश्चात इन्होंने आंदोलन का नेतृत्व किया और भारत को पराधीनता के जंजीर से मुक्त कराने में प्रमुख रूप से योगदान दिया।

महत्ता - गाँधीजी ने समाज को शांति और सत्य का पाठ पढ़ाया। समाज में हो रहे धर्म जाति के भेदभाव को नकारा और लोगों को नयी प्रेरणा दी। इन्होंने समाज में दलितों के प्रति हो रहे अत्याचार का विरोध किया और समाज से छुआ-छूत जैसे अंधविश्वासों पर अंकुश लगाने का सार्थक प्रयास किया। गाँधीजी ऐसे महामानव थे जिन्होंने देश की आजादी में अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया।

उपसंहार - गाँधीजी विश्व-बंधुत्व के पोषक एवं मानवमात्र के हित चिन्तक थे। ऐसे व्यक्तित्व के धनी महात्मा गाँधी की 30 जनवरी, 1948 को नई दिल्ली बिड़ला भवन में नाथुराम गोडसे द्वारा गोली मारकर हत्या कर दी गई। पूरा भारत अनाथ हो गया। लेकिन'गाँधीजी की जय' आज भी हमारे प्राणों में नया जोश और उत्साह भरता है।

-THE END-

BEST OF LUCK

A ONLINE SOLUTION BY ASHFAQUE SIR

बिहार बोर्ड कक्षा 10 वीं परीक्षाओं की सफलतापूर्वक तैयारी के लिए आती महावतपूर्ण पुस्तक

बिहार बोर्ड कक्षा 10 वीं 2023 की
Second Topper

नम्रता कुमारी 486 अंक

Follow me :

YouTube : A A ONLINE SOLUTION

Instagram : aaonlinesolutionofficial

Telegram : aaonlinesolution | What'sapp : 8210423200

Notes, PDf, Guess Paper, Chapter Wise Qestion Objective & subjective के लिए संपर्क करे/कॉल : 8210423200, 7254018562

Your Belief is my Goal...

Rs. 40/-

A A ONLINE SOLUTION PVT. LTD

ADD : BIHAR (NAWADA)

PH.: 8210423200

ALL CHAPTERWISE GUESS QUESTION